mediaauditornews@gmail.com mediaauditor Epaperdainikmediaauditor.in mediaauditor वर्ष-04 अंक-193 पृष्ठ-8 मूल्य-3 रूपये

सतना
13 जुलाई 2024 शनिवार

दैनिक मीडिया ऑडीटर

दैनिक मीडियाऑडीटर

सतना, रीवा से एक साथ प्रकाशित

वेकिच को ...
@ पेज 7

संक्षिप्त समाचार

जो करेगा जाति की बात, उसको मारूंगा कसकर लात

● जातिगत राजनीति को लेकर भड़के नितिन गडकरी

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय जनता पार्टी के नेता और केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने कास्ट की पॉलिटिक्स करने वाले नेताओं पर निशाना साधा है।

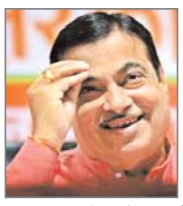

गडकरी ने एक कार्यक्रम में कहा कि महाराष्ट्र में इस समय जातिवाद की राजनीति हो रही है। मैं किसी भी तरह के जात-पात को नहीं मानता हूं और जो इसकी बात करेगा तो मैं उसको कसरक लात मारूंगा। केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने कहा कि मेरे निर्वाचन क्षेत्र में करीब 40 फीसदी मुसलमान हैं। मैंने उनको पहले ही बता दिया था कि मैं आरएसएस वाला हूं और हाफ चड्डी वाला हूं।

राज्य नहीं कर सकते हाईवे बंद, इसे जल्द खोला जाए

● शंभू बॉर्डर को लेकर हरियाणा सरकार से बोला सुप्रीम कोर्ट

नई दिल्ली (एजेंसी)। शंभू बॉर्डर खोलने को लेकर सुप्रीम कोर्ट ने बड़ी टिप्पणी की है। सुप्रीम कोर्ट ने हरियाणा सरकार की याचिका पर कहा कि कोई राज्य हाईवे को कैसे रोक सकता है। किसान भी देश के नागरिक हैं। उनकी

समस्याओं का समाधान करना सरकार की जिम्मेदारी है। सरकार को काम यातायात को नियंत्रित करना है। सुप्रीम कोर्ट की यह टिप्पणी हरियाणा और पंजाब हाईकोर्ट के उस फैसले के बाद आई है जिसमें उसने सप्ताहभर में शंभू बॉर्डर को खोलने का आदेश दिया था। शंभू बॉर्डर पर किसान पिछले 5 महीने से धरने पर बैठे हैं।

हार-जीत लगी रहती है न करें अपमानजनक भाषा का इस्तेमाल

● स्मृति ईरानी के खिलाफ भद्दे कमेंट करने वालों से राहुल गांधी ने की अपील

अमेठी (एजेंसी)। स्मृति इरानी पर भद्दे कमेंट करने वालों को लोकसभा में नेता विपक्ष राहुल गांधी ने नसीहत दी है। कांग्रेस के नेता राहुल गांधी ने अपने सोशल मीडिया प्लेटफार्म एक्स पर लोगों से ऐसा न करने के लिए कहा। राहुल

ने लिखा कि हार- जीत जीवन में लगी रहती है। मैं सभी से आग्रह करता हूं कि स्मृति ईरानी जी या किसी अन्य नेता के खिलाफ किसी भी प्रकार की कोई अपमानजनक या भद्दी टिप्पणी न की जाए। किसी का अपमान करना या किसी को नीचा दिखाना यह शक्तिशाली होने का नहीं कमजोर होने का प्रदर्शन करना है। किसी को भी ऐसा नहीं करना चाहिए।

800 गांव बाढ़ में डूबे

'पानी-पानी' हुआ नेपाल-यूपी बॉर्डर

20 लाख लोग प्रभावित, दिल्ली-लखनऊ हाईवे पर 3 फीट तक पानी

उत्तराखंड में बद्रीनाथ रूट पर लैंडस्लाइड,4 हजार से ज्यादा श्रद्धालु फंसे

नई दिल्ली (एजेंसी)। तेज बारिश के कारण नेपाल-यूपी बॉर्डर के करीब 7 जिलों में बाढ़ जैसे हालात हैं। पीलीभीत, लखीमपुर खीरी, बहराइच, श्रावस्ती, बलरामपुर, सिद्धार्थनगर और महराजगंज के करीब 800 गांव में 20 लाख से अधिक लोग बाढ़ से प्रभावित हैं। एनडीआरएफ और एसडीआरएफ की टीमें रेस्क्यू में जुटी हैं। यूपी की कई नदियां उफान पर हैं। दिल्ली-लखनऊ हाईवे पर शाहजहांपुर में करीब 2 से 3 फीट पानी भर गया है। इस कारण हाईवे का एक हिस्सा बंद कर दिया गया है। गाड़ियों को डाइवर्ट करके निकाला जा रहा है। शाहजहांपुर के मेडिकल कॉलेज में भी पानी भरने के बाद मरीजों को शिफ्ट कर दिया गया था।

उधर, उत्तराखंड में लगातार पांच दिन से हो रही बारिश और भूस्खलन के कारण 200 सड़कें बंद हैं। सबसे खराब हालात बद्रीनाथ रूट पर है, जहां 22 जगह लैंडस्लाइड से चार धाम यात्रा मार्ग 3 दिन से बंद है। 4 हजार श्रद्धालु सड़कों पर फंसे हैं। मुंबई में देर रात और सुबह तेज बारिश के कारण सड़कों और रेलवे ट्रैक पर पानी भर गया। ट्रेन और फ्लाइट सर्विस भी प्रभावित हुई हैं। इंडिगो एयरलाइंस ने भी एडवाइजरी जारी करते हुए कहा है कि फ्लाइट्स के टेक-ऑफ में देरी हो सकती है। उत्तर प्रदेश के कई जिलों में नदियों में बाढ़ आ गई है। शाहजहांपुर में एसडीआरएफ को रेस्क्यू के लिए लगाया गया है। पीलीभीत के डैम से छोड़े पानी के बाद गर्रा नदी उफान पर है। इससे शाहजहांपुर के 70 गांवों में बाढ़ आ गई है। यहां 4 से 5 फीट तक पानी भर गया है। लोग अपना घर छोड़ चुके हैं। स्थानीय लोगों का कहना है कि 2008 के बाद ऐसी बाढ़ आई है।

अब खुलेगा नीट यूजी पेपर लीक का बड़ा राज!

मास्टरमाइंड के गिरफ्त में आते ही सीबीआई आश्वस्त, कोलकाता से भी जुड़ा कनेक्शन

पटना (एजेंसी)। ये लोग तारीख पर तारीख पर देते रहेंगे, तो डेट आगे बढ़ती रहेगी। हमारा समय बर्बाद होगा। इससे हमारे ऊपर यह चुनौती है कि हमें समय कितना मिलेगा पढ़ने के लिए, यह तस्वीर साफ नहीं हो पा रही है।

हमारा भविष्य अधर में लटका हुआ है। हम कोर्ट से मांग करते हैं कि तारीख पर तारीख देना बंद करे और तुरंत फैसला सुनाए। उपरोक्त बयान विकास नाम के एक छात्र का है। नीट-यूजी पेपर लीक होने के बाद छात्रों की मानसिक स्थिति क्या है। इस बयान से आप उसका अंदाजा लगा सकते हैं।

वहीं दूसरी ओर सीबीआई इस मामले की जांच कर रही है। सीबीआई ने जब से जांच का जिम्मा लिया है, अब तक दर्जनों आरोपियों की गिरफ्तारी कर चुकी है। सीबीआई आरोपियों से लगातार पूछताछ कर रही है। सीबीआई ने अब तक बिहार और झारखंड के हजारीबाग और झरिया से कई लोगों को गिरफ्तार किया है। सभी के इस पेपर लीक में शामिल होने के कुछ न कुछ सबूत मिले हैं। अब सीबीआई के हत्थे एक ऐसा शख्स चढ़ा है, जो इस खेल का मास्टरमाइंड है। उसका नाम रॉकी उर्फ राकेश रंजन बताया जा रहा है। सीबीआई ने गुरुवार को मेडिकल प्रवेश परीक्षा में कथित पेपर लीक की जांच के

सिलसिले में राष्ट्रीय पात्रता सह प्रवेश परीक्षा-स्नातक (नीट-यूजी) के एक प्रमुख संदिग्ध राकेश रंजन उर्फ रॉकी को गिरफ्तार किया। उसे पटना में गिरफ्तार किया गया और विशेष सीबीआई अदालत में पेश किया गया, जहां से उन्हें 10 दिनों की सीबीआई हिरासत में भेज दिया गया है।

केंद्र का ऐलान, 25 जून 'संविधान हत्या दिवस' घोषित

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्र सरकार ने 25 जून को 'संविधान हत्या दिवस' घोषित कर दिया। गृह मंत्री अमित शाह ने शुक्रवार 12 जुलाई को सोशल मीडिया पर पोस्ट कर इसकी जानकारी दी। सरकार ने इसका नोटिफिकेशन भी जारी किया है। शाह ने लिखा, 25 जून 1975 को तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने अपनी तानाशाही मानसिकता को दर्शाते हुए देश में आपातकाल लगाकर भारतीय लोकतंत्र की आत्मा का गला घोंट दिया था। लाखों लोगों को अकारण जेल में डाल दिया गया और मीडिया की आवाज को दबा दिया गया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा, 25 जून को संविधान हत्या दिवस के रूप में मनाना इस बात की याद दिलाएगा कि उस दिन क्या

नोटिफिकेशन जारी,1975 में इसी दिन लगी थी इमरजेंसी

हुआ था और भारत के संविधान को कैसे कुचला गया था। ये भारत के इतिहास में कांग्रेस द्वारा लाया गया एक काला दौर था। उधर, कांग्रेस ने सरकार के इस फैसले को एक और सुर्खियां बटोरने वाली कवायद बताया। कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने कहा, यह नॉन बायोलॉजिकल प्रधानमंत्री की एक और सुर्खियां बटोरने वाली कवायद है, जिसने दस साल तक अघोषित आपातकाल लगाया था। उसके बाद भारत के लोगों ने उसे 4 जून, 2024 को एक निर्णायक व्यक्तिगत, राजनीतिक और नैतिक हार दी- जिसे इतिहास में मोदी मुक्ति दिवस के रूप में जाना जाएगा। इस साल 25 जून को इमरजेंसी की 49वीं बरसी थी। इससे एक दिन पहले यानी 24 जून को 18वीं लोकसभा के पहले सत्र में विपक्षी सांसदों ने संविधान की कॉपी लेकर शपथ ली थी। इसे लेकर प्रधानमंत्री ने कांग्रेस की आलोचना की। उन्होंने एक्स पर एक पोस्ट में लिखा कि इमरजेंसी लगाने वालों को संविधान पर प्यार जताने का अधिकार नहीं है। पीएम मोदी ने एक के बाद एक एक्स पर चार पोस्ट किए। उन्होंने कहा जिस मानसिकता की वजह से इमरजेंसी लगाई गई, वह आज भी इसी पार्टी में जिंदा है। इसके जवाब में चिदंबरम ने कहा कि देश को दूसरी इमरजेंसी से बचाने के लिए जनता ने वोट किया है।

वायुसेना को 15 अगस्त तक मिलेगा पहला तेजस मार्क 1ए

=अमेरिकी कंपनी सितंबर-अक्टूबर से जीई-404 इंजन की सप्लाई करेगी, इसमें एडवांस्ड रडार और सेल्फ डिफेंस की क्षमता

नई दिल्ली (एजेंसी)। हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड (हाल) भारतीय वायु सेना को पहला एलसीए

मार्क-1ए फाइटर जेट (तेजस) 15 अगस्त तक डिलीवर कर देगी। सॉफ्टवेयर इंटीग्रेशन में दिक्कतों और जीई-404 इंजन की सप्लाई में देरी के कारण इसमें रुकावट आ रही थी। अब अमेरिकी इंजन निर्माता कंपनी जीई की तरफ से कन्फर्मेशन दे दिया है, जिसके बाद इंजन की सप्लाई सितंबर-अक्टूबर से शुरू हो जाएगी।

इससे पहले फरवरी-मार्च में डिलीवरी होनी थी। एचएएल इंजन की डिलीवरी में तेजी लाने और मंथली सप्लाई रेट को बढ़ाने पर भी विचार कर रहा है। वायुसेना के अधिकारियों के मुताबिक तेजस की इंडक्शन सेरेमनी के लिए पीएम मोदी को आमंत्रित किया जा सकता है। दरअसल एलसीए मार्क 1ए प्रोजेक्ट की शुरुआत पीएम मोदी के कार्यकाल के दौरान ही हुई थी। इसके लिए हाल को 83 जेट के लिए 48 हजार करोड़ रुपए का ऑर्डर पहले ही मिल चुका है। 2024 के आखिर तक 97 और फाइटर जेट के लिए 65 हजार करोड़ रुपए का ऑर्डर मिलने की संभावना है।

आतंकी साजिश मामले में एनआईए का बड़ा ऐक्शन

2 दहशतगर्दों के खिलाफ दाखिल हुई चार्जशीट, कई खुलासे

नई दिल्ली (एजेंसी)। राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) ने आईएस आतंकी साजिश मामले में 2 लोगों के खिलाफ चार्जशीट दायर किया है। ये दोनों ग्लोबल टेरर नेटवर्क के औरंगाबाद स्थित छत्रपति संभाजीनगर से जुड़े मॉड्यूल में शामिल थे। एनआईए ने इस साल फरवरी में कई जगहों पर तलाशी के बाद

मोहम्मद जोहेब खान को गिरफ्तार किया था। जोहेब और लीबिया में रह रहे मोहम्मद शोएब खान पर आईएस आईएस के भारत विरोधी एजेंडे को बढ़ावा देने की साजिश का आरोप है। दोनों ने पूरे भारत में संवेदनशील स्थानों पर आतंकी हमलों के लिए युवाओं को भर्ती करने की साजिश रची थी। मुंबई स्थित एनआईए स्पेशल कोर्ट में शुक्रवार को यह आरोप पत्र दायर किया गया।

हाथरस हादसे पर सुप्रीम कोर्ट का सुनवाई से इनकार

कहा-हाईकोर्ट जाएं,याचिका में जांच कमेटी की मांग की गई थी

लखनऊ (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को हाथरस भगदड़ मामले पर दाखिल की गई याचिका पर सुनवाई करने से इनकार कर दिया। सीजेआई डीवाई चंद्रचूड़ ने कहा कि घटना परेशान करने वाली है, लेकिन ऐसे मामलों में हाइकोर्ट ही पर्याप्त है। कोर्ट ने याचिका लगाने वाले को हाईकोर्ट जाने को कहा। इस जनहित याचिका में हादसे की जांच की मांग की गई थी। 2 जुलाई को दाखिल याचिका में कहा गया था- जांच के लिए पांच एक्सपर्ट की टीम गठित की जाए। सुप्रीम कोर्ट के रिटायर्ड

जज की निगरानी में जांच हो। याचिका सीजेआई डीवाई चंद्रचूड़, जस्टिस जेबी पारदीवाला एवं जस्टिस मनोज मिश्रा की बेंच में सुनवाई के लिए आई। अधिवक्ता विशाल तिवारी ने दायर याचिका में घटना पर उत्तर प्रदेश सरकार को स्थिति रिपोर्ट दाखिल करने एवं लापरवाह अधिकारियों के विरुद्ध कानूनी कार्रवाई शुरू करने की मांग भी की थी। इसमें सुप्रीम कोर्ट से राज्यों को निर्देश देने का अनुरोध किया गया है कि वे किसी भी धार्मिक या अन्य आयोजन के आयोजन में जनता की सुरक्षा के लिए भगदड़ रोकने के लिए दिशा-निर्देश जारी करें।

ममता बनर्जी और बंगाल गवर्नर के बीच अब आ गया नया विवाद

● ताबड़तोड़ 8 बिल खारिज करने पर एससी पहुंची टीएमसी सरकार

नई दिल्ली (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल में एक बार फिर ममता बनर्जी और गवर्नर सीवी आनंद बोस के बीच ठन गई है। ममता सरकार के आठ विधेयकों को गवर्नर बोस द्वारा खारिज करने से यह नया विवाद उपजा है। ममता सरकार ने गवर्नर के फैसले के खिलाफ अब सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाया है। बंगाल सरकार की वकील आस्था शर्मा ने सुप्रीम कोर्ट में दाखिल याचिका पर देश के मुख्य न्यायाधीश जस्टिस डी वाई चंद्रचूड़ से तत्काल सुनवाई करने का अनुरोध किया है। याचिका में कहा गया है कि गवर्नर ने बिना कोई कारण बताए आठ विधेयकों को खारिज कर दिया है।

आंध्र प्रदेश के पूर्व सीएम की अब बढ़ सकती है मुश्किल

● जगन मोहन रेड्डी के खिलाफ हत्या के प्रयास का मुकदमा दर्ज

हैदराबाद (एजेंसी)। आंध्र प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री जगन मोहन रेड्डी मुश्किल में फंसते नजर आ रहे हैं। जगन मोहन रेड्डी के खिलाफ हत्या के प्रयास का मामला दर्ज किया गया है। उनके अलावा चार अन्य के खिलाफ भी केस दर्ज हुआ है, जिसमें दो आईपीएस अधिकारी और दो रिटायर अधिकारी भी शामिल हैं। अधिकारियों ने शुक्रवार को बताया कि यह केस टीडीपी विधायक रघुराम कृष्ण राजू की शिकायत पर दर्ज किया गया है। रेड्डी के अलावा आईपीएस अधिकारी पीवी सुनील कुमार, सीतारामजानेयुलू और रिटायर्ड पुलिस अधिकारी आर विजय पॉल के नाम भी शामिल हैं।

हुड्डा के करीबी, जेजेपी और बीजेपी को भी चटाई थी धूल

● सोनीपत के मेयर निखिल मदान ने छोड़ी कांग्रेस, बीजेपी में शामिल

सोनीपत (एजेंसी)। नगर निगम सोनीपत के मेयर निखिल मदान को दिल्ली स्थित हरियाणा भवन में आयोजित एक कार्यक्रम में कांग्रेस छोड़कर अपने समर्थकों के साथ बीजेपी में शामिल हो गए। इस अवसर पर प्रदेश के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी, केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल और नव नियुक्त प्रदेश अध्यक्ष मोहनलाल बड़ौली भी मौजूद रहे। इस अवसर पर मनोहर लाल ने कहा कि बीजेपी सरकार की कार्यशैली से प्रभावित होकर मेयर निखिल मदान ने पार्टी की सदस्यता ग्रहण की है। वे मेयर निखिल मदान का बीजेपी परिवार में स्वागत करते हैं। वहीं, मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि निखिल मदान विकास को लेकर हमेशा तत्पर रहते हैं।

अंतरिम जमानत के बाद सीएम केजरीवाल को फिर लगा झटका

● दिल्ली की अदालत ने 25 जुलाई तक बढ़ाई न्यायिक हिरासत

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली के सीएम केजरीवाल को ईडी वाले मामले में तो अंतरिम जमानत मिल गई, लेकिन सीबीआई वाले केस में उन्हें झटका लगा है। दिल्ली की राउज एवेन्यू कोर्ट ने उनकी न्यायिक हिरासत 25 जुलाई तक बढ़ा दी है। बता दें कि दिल्ली शराब घोटाला मामले में ईडी और सीबीआई दोनों ने उन्हें अलग-अलग मामलों में गिरफ्तार किया था। केजरीवाल ने दोनों ही गिरफ्तारी को चुनौती दी है। सीबीआई वाली गिरफ्तारी पर दिल्ली हाई कोर्ट 17 जुलाई को सुनवाई करेगा। सीएम केजरीवाल को सुबह 11 बजे के लगभग सुप्रीम कोर्ट से बड़ी राहत मिली।

संक्षिप्त समाचार

एडीएम ने भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता 2023 के अंतर्गत प्रदत्त शक्तियों को प्रयोग करते हुए प्रतिबंधात्मक आदेश किये जारी

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। अतिरिक्त जिला मजिस्ट्रेट भोपाल श्री हिमांशु चन्द्र ने भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता 2023 के अंतर्गत प्रदत्त शक्तियों को प्रयोग करते हुए भोपाल जिले के अन्तर्गत लालघाटी क्षेत्र से संत हिरदाराम नगर बैरागढ़ तक लालघाटी से विमानतल तक, विमानतल से मुबारकबुर चौराहा क्षेत्र तक तथा विमानतल से करोंद चौराहे तक के क्षेत्र में प्रतिबंधात्मक आदेश जारी किये हैं। जिसके अंतर्गत लालघाटी क्षेत्र से संत हिरदाराम नगर बैरागढ़ तक, लालघाटी से विमानतल तक, विमानतल से मुबारकबुर चौराहा क्षेत्र तक तथा विमानतल से करोंद चौराहे तक के क्षेत्र में किसी भी भवन, मैरेज गार्डन में विवाह एवं अन्य किसी भी प्रकार के जुलूस के दौरान लेजर बीम लाईट का उपयोग पूर्णतः प्रतिबंधित रहेगा । लालघाटी क्षेत्र से संत हिरदाराम नगर बैरागढ़ तक, लालघाटी से विमानतल तक, विमानतल से मुबारकबुर चौराहा क्षेत्र तक तथा विमानतल से करोंद चौराहे तक के क्षेत्र में किसी भी भवन, मैरेज गार्डन में विवाह एवं अन्य किसी भी प्रकार के जुलूस के दौरान हवाई पटाखे (स्द्म4 स्न्द्वह्ल्द्ध 2श्रह्ल्झ्ह्य) का उपयोग पूर्णतः प्रतिबंधित रहेगा । लालघाटी क्षेत्र से संत हिरदाराम नगर बैरागढ़ तक, लालघाटी से विमानतल तक, विमानतल से मुबारकबुर चौराहा क्षेत्र तक तथा विमानतल से करोंद चौराहे तक के क्षेत्र में ड्रोन का उपयोग पूर्णतः प्रतिबंधित रहेगा । इस आदेश का उल्लंघन करने वाले व्यक्ति के विरूद्ध भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता के अंतर्गत कार्यवाही की जाएगी।

विदेश में उच्च शिक्षा छात्रवृत्ति के लिए 31 जुलाई तक किये जा सकेंगे आवेदन

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। सामान्य, अनारक्षित वर्ग के प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को विदेश में स्नातकोत्तर एवं पीचएडी उपाधि के लिए छात्रवृत्ति योजना सत्र 2024-25 (सत्र जुलाई से दिसम्बर 2024) के अन्तर्गत आवेदन आंमत्रित किए जा रहे हैं। आवेदन जमा करने की अंतिम तिथि 31 जुलाई 2024 निर्धारित की गई है। योजनांतर्गत पात्र विद्यार्थी आवेदन की अंतिम तिथि 31 जुलाई को सायं 6 बजे तक कार्यालय आयुक्त उच्च शिक्षा संचालनालय, तृतीय तल, सतपुड़ा भवन, भोपाल में स्वयं अथवा वाहक अथवा डाक द्वारा द्वारा अपना आवेदन जमा कर सकेंगे। अपात्र/अपूर्ण/त्रुटिपूर्ण एवं निर्धारित तिथि के पश्चात् प्राप्त आवेदन विचारणीय नहीं होंगे। अनारक्षित वर्ग के प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को विदेश में उच्च शिक्षा (स्नातकोत्तर एवं पीचएडी उपाधि के लिए) प्राप्त करने के लिये राज्य सहायता छात्रवृत्ति में आवेदन करने के लिए विद्यार्थी, मध्यप्रदेश का मूल निवासी होना अनिवार्य है। विद्यार्थी का अर्हकारी परीक्षा स्नातक/स्नातकोत्तर में 60 प्रतिशत से अधिक अंक से उत्तीर्ण होना अनिवार्य है और उच्च शिक्षा विभाग द्वारा अनुमोदित सूची में सम्मिलित विदेश में स्थित विश्वविद्यालयों/महाविद्यालयों में अध्ययन के लिये प्रवेश (ऑफर लेटर) प्राप्त करना अनिवार्य है। विस्तृत जानकारी एवं आवेदन पत्र उच्च शिक्षा विभाग की बेवसाइट पर नवीन निर्देश के अन्तर्गत विदेश में उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिये छात्रवृत्ति योजना की मार्गदर्शिका शीर्षक पर उपलब्ध है।

एक वर्षीय सेवा कालीन प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के लिये आवेदन 15 जुलाई तक

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। स्कूल शिक्षा विभाग में एक वर्षीय सेवा कालीन प्रशिक्षण (अग्रेंजी भाषा) प्रारंभ किया जा रहा है। यह प्रशिक्षण राज्य शिक्षा केन्द्र के अंतर्गत संचालित आंग्ल भाषा शिक्षण संस्थान (इंग्लिश लैंगवेज टीचिंग इन्स्टीट्यूट) में दिया जाएगा। यह पाठ्यक्रम बरकतउल्ला विश्वविद्यालय से संबद्ध है। राज्य शिक्षा केन्द्र ने स्कूल शिक्षा विभाग के शिक्षकों से प्रशिक्षण के लिये आवेदन आमंत्रित किये हैं। आवेदन 15 जुलाई 2024तक जमा कराये जा सकते हैं। इसके लिए जिला शिक्षा अधिकारी एवं सहायक आयुक्त आदिवासी विकास विभाग को निर्देश दिये है कि जिले से कम से कम 2 पात्र आवेदकों के आवेदन के माध्यम से भेजने के निर्देश दिये गये हैं। प्रशिक्षण कार्यक्रम पाठ्यक्रम वर्ष 2024-25 के लिये आयोजित किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में प्रदेश के प्रत्येक जिले का प्रतिनिधित्व हो, यह सुनिश्चित करने के लिये कहा गया है। यह प्रशिक्षण अंग्रेजी भाषा के शिक्षकों के लिये राज्य शिक्षा केन्द्र द्वारा आयोजित किया जा रहा है। प्रशिक्षण के माध्यम से शिक्षकों में कौशल विकास किया जाता है।

भारतीय वायु सेना (अग्निवीर) के लिए आवेदन 28 जुलाई तक

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। भारतीय वायु सेना (अग्निवीर) के लिए ऑनलाईन आवेदन 08 जुलाई से 28 जुलाई 2024 तक किए जा सकेंगे। इच्छुक युवा आवेदन के लिए वेबसाइट पर जाकर अपना पंजीयन करा सकते है। जिनका जन्म 03 जुलाई 2004 और 03 जनवरी 2008 के मध्य हुआ है वह युवा आवेदन करने के लिये पात्र है। शैक्षणिक योग्यता संबंधी जानकारी विज्ञापन या भारतीय वायु सेना भर्ती की वेबसाइट से प्राप्त की जा सकती है।

अधिकारी मैदानी दौरा कर गाइड लाइन के अनुसार तत्परता से कार्य करवायें-मंत्री उइके

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। संभागीय एवं जिला अधिकारी मैदानी दौरा कर गाइड लाइन के अनुसार तत्परता से जल जीवन मिशन के कार्य को प्राथमिकता से करवायें। यह बात लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी मंत्री श्रीमती सम्पतिया उइके ने जल भवन में वीसी के माध्यम से पूरे प्रदेश के अधिकारियों से जुड़कर जल जीवन मिशन की समीक्षा में कही। मंत्री श्रीमती उइके ने कहा कि जल जीवन मिशन के कार्यों को गुणवत्ता साथ समय-सीमा में पूर्ण करें।बारिश में पेयजल की स्वच्छता का रखा विशेष ध्यान रखा जाये। ग्रामीणों को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराने के लिये पेयजल का नियमित परीक्षण करवायें एवं पानी का क्लोरिनेशन एवं पानी की टंकी की सफाई आदि का कार्य भी नियमित रूप से करवाया जाये। लम्बे समय से अपूर्ण योजनाओं को दो माह में पूर्ण करने के निर्देश दिये। तय समय सीमा में कार्य पूर्ण नहीं करने वाले

अधिकारियों पर सख्त कार्रवाई करने के निर्देश दिये। मंत्री श्रीमती उईके ने बालाघाट की कार्यशैली से नाराज होकर कारण बताओ नोटिस जारी करने के निर्देश दिये। श्रीमती उइके ने कहा कि सभी अधिकारी अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन पूरी ईमानदारी के साथ करें। विभाग का कार्य ग्रामीणों को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराने जैसे पवित्र कार्य से जुड़ा है। योजनाओं का सर्टिफिकेशन का कार्य 15 अगस्त पर होने वाली ग्रामसभा में करवाया जाये। जियो टेगिंग में पूरे देश में प्रथम स्थान पर आने पर मंत्री ने अधिकारियों को बधाई दी। उन्होंने कहा कि अच्छा कार्य करने वाले अधिकारियों को पुरस्कृत भी किया जाये। सभी अधिकारियों ने गर्मी में ग्रामीणों को स्वच्छ पेयजल जल उपलब्ध कराने के लिये सराहनीय कार्य किया है।

जल जीवन योजना के परीक्षण के बाद ही पंचायत को हेण्डओवर किया जाये। मंत्री श्रीमती उइके ने संभागवार, जिलावार एवं खण्डवार जल जीवन मिशन की समीक्षा कर मुख्य अभियंता, अधीक्षण यंत्री, कार्यपालन यंत्री एवं सहायक यंत्रियों को कार्य में प्रगति लाने के निर्देश दिये। सचिव श्री पी. नरहरि ने कहा कि हर 15 दिन में कार्यों की समीक्षा की जायेगी और संभागीय स्तर पर भी नियमित रूप से कार्यों की समीक्षा की जायेगी।

जिंदगी की सांसों के लिए पौधों का बड़ा योगदान-खाद्य मंत्री श्री राजपूत

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। जिंदगी की सांसों के लिए पौधों का बड़ा योगदान है। खाद्य नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री श्री गोविंद सिंह राजपूत ने यह बात प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की परिकल्पना एक पेड़ मां के नाम अभियान में सागर जिले के ग्राम भिलैया में 25 हजार पौधे लगाने की शुरुआत करते हुए कही। मंत्री श्री राजपूत ने कहा कि हम सब की जिंदगी में पौधों का बड़ा योगदान है। यदि पौधे नहीं होंगे तो हमारी जिंदगी भी नहीं होगी। इसलिए हम सबको संकल्प लेना होगा कि सभी अपनी मां के नाम, अपने परिजनों के नाम एवं अपने नाम एक पौधा अवश्य लगाएँ। उन्होंने कहा कि पौधा केवल लगायें नहीं, उनको बचाने का संकल्प भी लें और उसकी लगातार देखभाल करें जब तक कि वह पौधा पेड न बन जाए। मंत्री श्री राजपूत ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी एवं मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव द्वारा जो एक पेड़ मां के नाम अभियान प्रारंभ किया गया है, इसके अंतर्गत मध्यप्रदेश में 5 करोड़ पौधे लगाने का लक्ष्य रखा गया है। सागर में वन विभाग द्वारा 1 लाख 50 हजार पौधों सहित संपूर्ण सागर जिले में 25 लाख पौधे लगाने का लक्ष्य लिया गया है। उन्होंने कहा कि हम सबको आज यह संकल्प लेना होगा कि 25 लाख पौधों को लगाने के बाद उनको बचाने का कार्य भी हम सब करें। खाद्य नागरिक आपूर्ति मंत्री श्री गोविंद सिंह राजपूत ने मध्यप्रदेश शासन के वायुदूत एप को मोबाइल में डाउनलोड कर बरगद का पौधा लगाकर सेल्फी ली। उन्होंने सभी से आहवान किया कि हम सब पौधा लगाकर वायुदूत एप पर सेल्फी लेकर अपलोड करें और उसकी लगातार वृक्ष होने तक निगरानी भी करें।

भोपाल स्मार्ट सिटी में 940 करोड़ रूपये के कार्य पूरे किये गये

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। स्मार्ट सिटी मिशन के तहत भोपाल स्मार्ट सिटी में 940 करोड़ रूपये के 70 प्रोजेक्टस पूरे किये जा चुके हैं। केन्द्र सरकार ने 25 जुलाई 2015 को स्मार्ट सिटी मिशन की गाइड लाइन जारी की थी। इसके अंतर्गत प्रतिस्पर्धा के आधार पर देश के 100 शहरों का चयन किया गया था। स्मार्ट सिटी मिशन के मुख्य उद्देश्य शहरों का समुचित विकास, आर्थिक सुधार और नागरिकों की जीवन-शैली में सुधार किया जाना था। भोपाल स्मार्ट सिटी में जिन कार्यों को प्रमुखता से पूरा किया गया है, उनमें पब्लिक बाइक शेयरिंग, स्मार्ट रोड, बुलेवर्ड स्ट्रीट, स्मार्ट पोल, स्मार्ट एलईडी लाइट, शासकीय आवास का निर्माण, युवाओं के स्किल्ड डेवलपमेंट के लिये इनक्युबेशन सेंटर का निर्माण, पुरातत्व धरोहर का संरक्षण और सदर मंजिल का जीर्णोद्धार प्रमुख है। इन तमाम प्रोजेक्टस पर 940 करोड़ रूपये के कार्य पूरे किये जा चुके हैं।

पंचायत राज्यमंत्री ने सूरत दुर्घटना में मृतकों के परिजन से भेंट कर शोक संवेदना व्यक्त की

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। पंचायत एवं ग्रामीण विकास राज्यमंत्री श्रीमती राधा सिंह ने सूरत दुर्घटना के मृतकों के घर जाकर उनके परिजनों से शोक संवेदना व्यक्त की। राज्यमंत्री ने कहा कि दुर्घटना में असमय अपने प्रियजनों को खो देना बहुत कष्टकारी होता है। दु:ख की इस घड़ी में सरकार आपके साथ है तथा जीवन को सुव्यवस्थित करने में हर संभव सहायता प्रदान की जाएगी। उन्होंने जिला रेडक्रास सोसायटी के माध्यम से मृतकों के निकटतम परिजन को 25-25 हजार रूपये की आर्थिक सहायता प्रदान की। उन्होंने कहा कि संबल योजना में पंजीकृत श्रमिकों के निकटतम परिजन को योजना के माध्यम से तथा अन्य को मुख्यमंत्री स्वेच्छानुदान से 4-4 लाख रूपये की आर्थिक सहायता उनके खातों में प्रदान की जाएगी। राज्यमंत्री ने उपस्थित अधिकारियों को निर्देशित किया है कि पीड़ित परिवारों को अन्य योजनाओं का लाभ भी प्राथमिकता से मिलेगा। राज्यमंत्री श्रीमती सिंह ने ग्रामीणजनों की समस्याएं भी

सुनी तथा अधिकारियों को तत्परता से समस्याओं के निराकरण के निर्देश दिए। ग्राम दियाडोल के निवासियों के पेयजल संबंधी समस्या का प्राथमिकता से निराकरण करने के निर्देश दिए हैं। साथ ही उन्होंने सभी पात्र हितग्राहियों को प्रधानमंत्री आवास योजना एवं सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजना का लाभ देने के निर्देश भी दिए।

विदेश में उच्च शिक्षा (स्नातकोत्तर एवं पीचएडी उपाधि के लिए) छात्रवृत्ति के लिए 31 जुलाई तक होंगें आवेदन

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। प्रदेश के सामान्य, अनारक्षित वर्ग के प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को विदेश में स्नातकोत्तर एवं पीचएडी उपाधि के लिए छात्रवृत्ति योजना सत्र 2024-25 (सत्र जुलाई से दिसम्बर 2024) के अन्तर्गत आवेदन आंमत्रित किए जा रहे हैं। आवेदन जमा करने की अंतिम तिथि 31 जुलाई 2024 निर्धारित की गई है। योजनांतर्गत पात्र विद्यार्थी आवेदन की अंतिम तिथि 31 जुलाई को सायं 6 बजे तक कार्यालय आयुक्त उच्च शिक्षा संचालनालय, तृतीय तल, सतपुड़ा भवन, भोपाल में स्वयं अथवा वाहक अथवा डाक द्वारा द्वारा अपना आवेदन जमा कर सकेंगे। अपात्र/अपूर्ण/त्रुटिपूर्ण एवं निर्धारित तिथि के पश्चात् प्राप्त आवेदन विचारणीय नहीं होंगे। अनारक्षित वर्ग के प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को विदेश में उच्च शिक्षा (स्नातकोत्तर एवं पीचएडी उपाधि के लिए) प्राप्त करने के लिये राज्य सहायता छात्रवृत्ति में आवेदन करने के लिए विद्यार्थी, मध्यप्रदेश का मूल निवासी होना अनिवार्य है। विद्यार्थी का अर्हकारी परीक्षा स्नातक/स्नातकोत्तर में 60 प्रतिशत से अधिक अंक से उत्तीर्ण होना अनिवार्य है और उच्च शिक्षा विभाग द्वारा अनुमोदित सूची में सम्मिलित विदेश में स्थित विश्वविद्यालयों/महाविद्यालयों में अध्ययन के लिये प्रवेश (ऑफर लेटर) प्राप्त करना अनिवार्य है। इस संबंध में विस्तृत जानकारी एवं आवेदन पत्र उच्च शिक्षा विभाग की बेवसाइट पर नवीन निर्देश के अन्तर्गत विदेश में उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले प्रतिभाशाली विद्यार्थियों के लिये छात्रवृत्ति योजना की मार्गदर्शिका शीर्षक पर उपलब्ध है।

अनाधिकृत बिजली जलाने पर 20 प्रकरणों में 4 लाख 72 हजार से अधिक की बिलिंग की गई

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी द्वारा 181 प्रकरणों में सूचना प्राप्त होने के उपरांत 57 प्रकरणों में जांच की गई। इनमें 20 प्रकरणों में अवैध बिजली की चोरी पाये जाने पर 4 लाख 72 हजार 838 रूपये के बिल जारी किए गए, जिसमें 6 प्रकरणों में 1 लाख 23 हजार 643 रूपये की कुल राशि प्राप्त की गई है। इनमें ग्वालियर शहर वृत्त में कुल 70 शिकायतें मिली, जिनमें से 24 की जांच की गई तथा 6 प्रकरणों में 1 लाख 18 हजार 917 रूपये की बिलिंग की गई। इसके विरूद्ध 77 हजार 243 रूपये का राजस्व अर्जित किया गया। इसी तरह ग्वालियर ग्रामीण वृत्त में 26 गुप्त शिकायतों में से 11 को चेक किया गया। ग्रामीण सर्किल दतिया में 21 प्रकरणों में से 16 की जांच की गई तथा एक प्रकरण में 17 हजार 857 रूपये का बिल दिया तथा 3 प्रकरणों में 46 हजार 400 रूपये का राजस्व अर्जित किया गया। मुरैना में 42 शिकायतों पर 1 की जांच की गई जबकि भिंड ग्रामीण में कुल 22 शिकायतों के विरूद्ध 05 की जांच हुई तथा इनमें से 13 की बिलिंग की गई जिनको 3 लाख 36 हजार 064 रूपये बिल दिया गया। गौरतलब है कि कंपनी द्वारा विद्युत की चोरी के प्रभावी रोकथाम एवं विद्युत के अवैध उपयोग को रोकने के लिए यह योजना चलाई गई है। योजनांतर्गत कोई भी व्यक्ति बिजली के अवैध उपयोग के संबंध में सूचना कंपनी मुख्यालय, क्षेत्रीय कार्यालय में मुख्य महाप्रबंधक, संचा.संधा/शहर वृत्त कार्यालय के महाप्रबंधकों को लिखित अथवा मोबाईल पर दे सकता है।

हाल ही में कंपनी की वेबसाईट पर ऑनलाईन सूचना देने की व्यवस्था की गई है। सफल सूचनाकर्ता को अथवा उपभोक्ता को विद्युत चोरी की क्षतिपूर्ति की पूर्ण राशि जमा होने पर, बिल की राशि के दस प्रतिशत की राशि को पारितोषिक राशि के रूप में दिये जाने का प्रावधान है। पारितोषिक योजना के अंतर्गत सूचनाकर्ता के संबंध में जानकारी पूर्णतः गोपनीय रखते हुए, कंपनी मुख्यालय से प्रोत्साहन की राशि सीधे संबंधित सूचनाकर्ता के बैंक के खाते में हस्तांतरित की जाती है। इस योजना के अंतर्गत क्षेत्रीय, वृत्त स्तर के अधिकारियों को जो शिकायतें प्राप्त होती है, उन शिकायतों पर तत्परता से कार्रवाई सुनिश्चित किये जाने के लिये कंपनी मुख्यालय के द्वारा सतत रूप से निगरानी रखी जाती है। फर्म, एजेंसी, संगठन भी सूचनाकर्ता हो सकते है, जिन्हें कंपनी मुख्यालय में पदस्थ नोडल अधिकारी के माध्यम से पंजीकरण कराना आवश्यक है। मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी द्वारा बिजली चोरी की रोकथाम के लिए इनाम योजना में सूचनाकर्ता को निर्धारित शर्तों के अधीन पारितोषिक देने का प्रावधान है।

सूचना के आधार पर राशि वसूली होने पर सफल सूचनाकर्ता को 10 प्रतिशत राशि का भुगतान किया जाएगा। इस राशि की अधिकतम सीमा नहीं है। सूचनाकर्ता को प्रोत्साहन राशि कंपनी मुख्यालय द्वारा सीधे सूचनाकर्ता के बैंक खाते में जमा की जाएगी। प्रकरण बनाने एवं राशि वसूली करने वाले विभागीय अधिकारियों एवं कर्मचारियों को भी ढाई प्रतिशत राशि प्रोत्साहन के रूप में दी जाएगी। वर्तमान में इस व्यवस्था को पूर्ण रूप से ऑनलाइन किया गया है तथा कंपनी वेबसाइट लिंक पर क्लिक करके, सूचनाकर्ता के द्वारा गुप्त सूचना दर्ज की जा सकती है।

बिजली कंपनी के कर्मचारियों को 35 वर्ष पूरा करने पर मिलेगा चतुर्थ वेतनमान

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। बेहतर सेवा कर बिजली कंपनी की अच्छी इमेज बनाएं। कंपनी की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ करें। उपभोक्ताओं के फोन सभी बिजली कर्मचारी एवं अधिकारी उठाएं। ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने यह बात पॉवर इंजीनियर्स एण्ड एम्पलॉइज एसोसिएशन एवं भारतीय मजदूर संघ के प्रतिनिधियों के साथ बैठक में कही। मंत्री श्री तोमर ने कहा कि उनकी मांगों पर सहानुभूतिपूर्वक विचार कर जरूरी कार्यवाही करेंगे। ऊर्जा मंत्री श्री तोमर ने कहा कि मध्यप्रदेश शासन द्वारा अपने कर्मचारियों को 35 वर्ष पूर्ण होने पर चतुर्थ वेतनमान घोषित किया गया था। इसी के अनुरूप यह निर्णय लिया गया है कि इस आदेश को सभी कंपनियों में लागू किया जाये,

जिससे 35 वर्ष पूर्ण कर चुके अधिकारियों/कर्मचारियों को उसका लाभ मिल सके। इसी प्रकार, कंपनी कैडर के अधिकारियों के दूसरे उच्च वेतनमान में अधीक्षण अभियंता समकक्ष की विसंगति, (ओ-3 स्टार) के रूप में थी, उसको भी समाप्त करने का निर्णय लिया गया है। ऊर्जा मंत्री श्री तोमर ने संगठन के पदाधिकारियों द्वारा प्रस्तुत मांग-पत्र के बिन्दुओं पर पृथक-पृथक चर्चा की। उन्होंने कहा कि इन मांगों पर कार्य-योजना बनाकर क्रमबद्ध निर्णय लेंगे। मंत्री श्री तोमर ने कहा कि कैशलेस हेल्थ इन्श्योरेंस के संबंध में कर्मचारियों से चर्चा कर अतिशीघ्र निर्णय लिया जाएगा। बैठक में वेतन विसंगति, नियुक्ति, वर्षों से लंबित नाइट शिफ्ट अलाउंस आदि बेनिफिट, विद्युत अधिकारियों/कर्मचारियों की सुरक्षा और बिजली कंपनियों में चालू प्रभार वरिष्ठता के आधार पर देने के संबंध में चर्चा हुई। बैठक में अपर मुख्य सचिव ऊर्जा श्री मनु श्रीवास्तव एवं पॉवर इंजीनियर्स एण्ड एम्पलॉइज एसोसिएशन और भारतीय मजदूर संघ के पदाधिकारी उपस्थित थे।

कार्यकर्ताओं के परिश्रम से कई राज्यों में बढ़ा भाजपा का वोट प्रतिशत

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। लोकसभा सांसद डॉ राजेश मिश्रा ने 7 जुलाई को भोपाल में आयोजित भारतीय जनता पार्टी की विस्तारिक प्रदेश कार्यसमिति की बैठक में पारित राजनीतिक प्रस्तावों और 3 जुलाई को मध्यप्रदेश सरकार द्वारा विधानसभा में प्रस्तुत बजट को लेकर भाजपा जिला अध्यक्ष की अध्यक्षता एवं धौहनी विधायक कुंवर सिंह टेकाम, जिला मीडिया प्रभारी सुरेंद्र मणि दुबे की विशिष्ट उपस्थित मे आयोजित पत्रकार वार्ता को संबोधित करते हुए कहा कि भाजपा कार्यकर्ताओं की अथक मेहनत और परिश्रम से भाजपा को मध्यप्रदेश सहित देशभर में इस लोकसभा चुनाव में ऐतिहासिक सफलता प्राप्त हुई है।

सांसद ने पत्रकारों को संबोधित करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में डबल इंजन सरकर द्वारा बीते दस वर्षों में किए गए गरीब कल्याण, सुशासन के कामों और जनहित की योजनाओं के कारण ही मध्यप्रदेश के लोकसभा चुनाव में भाजपा को सभी 29 लोकसभा सीटों पर विजय प्राप्त हुई है। इसके साथ ही दक्षिण के राज्यों के साथ देश भर में भाजपा का वोट प्रतिशत बढा है। सांसद डॉक्टर मिश्रा ने बताया कि हाल ही में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में भाजपा सरकार द्वारा विधानसभा में जो बजट प्रस्तुत किया गया है, वह बजट जनता के हितों को ध्यान में रखते हुए लाया गया है। यह बजट 2024 विकसित भारत बनाने के संकल्प को पूरा करने में योगदान देने वाला है। सांसद डॉक्टर ने कहा कि प्रदेश की भाजपा सरकार द्वारा स्वास्थ्य विभाग में 42 हजार पदों पर भर्ती प्रारंभ की जा रही है। इसके साथ ही 7500 से अधिक पुलिस और 11 हजार से अधिक शिक्षकों के पदों को भी भरने की प्रक्रि या शुरू होगी। इनके साथ ही अन्य विभागों के हजारों रिक्त पदों पर भी भर्ती की तैयारी है। युवाओं को रोजगार उपलब्ध कराने में भाजपा सरकार विशेष ध्यान दे रही है।

जिला शिक्षा अधिकारी ने समीक्षा बैठक में दिये निर्देश

सुबह 10 से शाम 6 बजे तक विद्यालय में शिक्षक रहेंगे उपस्थित, नहीं तो कटेगा वेतन

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। जिला शिक्षा अधिकारी डॉ प्रेमलाल मिश्र द्वारा शुक्रवार को जिले समस्त शासकीय विद्यालयों के प्राचार्यों की समीक्षा बैठक आहुत की गयी। जिसमें शिक्षकों को वरिष्ठ अधिकारियों से बात करने का सलीका, पहनावा, रहन सहन के तरीके पर विशेष हिदायत दी गई तत्पश्चात शिक्षकों को तम्बाकू, गुटखा एवं किसी तरह के नशीले पदार्थ विद्यालय परिसर के अंदर उपयोग न करने का फरमान जारी किया गया।

डॉ. प्रेमलाल मिश्रा ने छात्रों के नामांकन, पुस्तक वितरण, छात्रों की उपस्थिति कम होने पर भी काफी अप्रसन्नता व्यक्त की है। सभी शिक्षकों को सुबह 10 से शाम 6 बजे तक विद्यालय में रहने के निर्देश दिए हैं साथ ही यह भी निर्देश दिए कि किसी भी दिनांक का वेतन कोई शिक्षक उक्त समय पर उपस्थित रहने पर ही पात्र होगा। साथ ही कहा कि विद्यार्थी ही आपकी पूंजी हैं कोई बच्चा प्रवेश से वंचित न रहे यह आपकी जिम्मेदारी है। जिला शिक्षा अधिकारी ने यह भी निर्देश दिया कि स्थानाभाव के प्रस्ताव भी जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय को विस्तृत रूप से भेजें।

विद्यालय से अब होगी बीडियो कॉलिंग: जिला शिक्षा अधिकारी ने बताया कि छात्रों के सर्वांगिण विकास हेतु जिला कलेक्टर के निर्देशन में नवीन शैक्षणिक सत्र में कई नवाचार प्रारंभ किये गयें हैं। इसी तारतम्य में विगत वर्ष के वार्षिक परीक्षा परिणाम को और बेहतर करते हुए प्रदेश स्तर पर सीधी जिले का नाम रोशन करने के लिये प्रयास जारी हैं। जिसके तहत कुछ शासकीय लापरवाह शिक्षक जो कार्य अवधि के दौरान विद्यालय से नदारत रहते हैं। उन पर नकेल कसने की मंशा लिये नवाचार की शुरूआत की जा रही है। जिसके तहत समस्त शासकीय विद्यालयों के गुरूजनो को निर्देशित किया गया है कि विद्यालयों का औचक निरीक्षण आनलाइन करने के उद्देश्य से सभी विद्यालय समय में अपने मोबाइल आनलाइन रखें।

डीपीसी ने लचर व्यवस्था के प्रति जताई नाराजगी: उक्त समीक्षा बैठक में डीपीसी राजेश तिवारी ने भी जिले में नामांकन, पुस्तक वितरण, अव्यवस्थित शाला संचालन, छात्रों की कम उपस्थिति पर नाराजगी जताई। जिला शिक्षा अधिकारी ने बृजकोर्स एवं उससे संबंधित अभिलेख संधारित करने के निर्देश देते हुए शिक्षकों को रीडिंग और राइटिंग की आदत बनाए रखने की बात कहते हुए छात्रों से भी दो पेज हिंदी और दो पेज अंग्रेजी के अवश्य लिखाएं और सभी बच्चों की कापियां हर हाल में प्राचार्यों को चेक करने के आदेश जारी किए। 30 प्रतिशत से कम परीक्षा परिणाम वाले अतिथि शिक्षकों की सूची एक दिवस के अंदर देने के निर्देश प्राचार्यों को दिए गयें हैं। आकस्मिक अवकाश पंजी विधिवत संधारित हो एवं विगत 5 वर्ष के चिकित्सा अवकाश सभी कर्मचारियों की सेवा पुस्तिका में दर्ज किए जाने के भी निर्देश दिए। समय चर अवश्य बना हो उससे सभी शिक्षक सूचित हों, विद्यालय हर हाल में संचालित हों चाहे एक ही छात्र उपस्थित हो। सीएम हेल्पलाइन के संबंध में निर्देश देते हुए कहा गया कि नियम से कार्य करें तो शिकायत नहीं होगी, सभी प्राचार्य अपने विद्यालय से संबंधित शिकायतों को तत्काल निराकरण कर बंद कराएं। समीक्षा बैठक का संचालन और बैठक के एजेंडे का वाचन एपीसी रमसा डॉ सुजीत मिश्र ने किया।

'जैसा तुम कहो' नाटक का मंचन आज

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा शहर के सभी कलाप्रेमी दर्शकों के लिए एक ऐसे नाटक की प्रस्तुति होगी, जो पारिवारिक जीवन के उतार चढ़ाव की एक ऐसी कहानी दर्शाएगा, जो सभी दर्शकों को अपनी ओर आकर्षित करेगा। जाने माने नाटककार जयवर्धन द्वारा लिखित इस नाटक का नाम है "जैसा तुम कहो" जिसका निर्देशन शहर के युवा रंगकर्मी अमर द्विवेदी ने किया है। अमर द्विवेदी मध्यप्रदेश नाट्य विद्यालय से प्रशिक्षित अभिनेता है। यह नाट्य प्रस्तुति अमरवाणी नाट्य समिति के द्वारा हो रही है और यह नाटक श्याम शाह चिकित्सा महाविद्यालय रीवा में 13 जुलाई यानिकि आज की शाम प्रदर्शित होगा। नाटक के अनुसार ज़िन्दगी के एक पड़ाव पर आते-आते हम अत्यधिक सहनशील हो जाते हैं। हमारा दिल व सोच बड़ी हो जाती है, स्वार्थ व अहंकार खत्म हो जाता है और दूसरों की भलाई व खुशी में ही अपनी खुशी देखने लगते हैं। नाटक के केन्द्र बिन्दु में पति-पत्नी का संबंध है, जो एक दूसरे की खुशी का बहुत ध्यान रखते हैं। पति अपनी पत्नी की किसी भी बात के लिए मना नहीं कर पाता, बल्कि यही चाहता है कि उसकी पत्नी हमेशा खुश रहे। हालांकि पति को इसका नकारात्मक परिणाम भी भोगना पड़ता है, क्योंकि रिश्तों में प्रायः ऐसा होता है कि हम दूसरे को खुश करने के लिए अपनी खुशी को अनदेखा कर देते हैं। नाटक में पति-पत्नी की मीठी-मीठी नोकझोंक दर्शकों को काफ़ी पसंद आएंगी। नाटक के निर्देशक अमर द्विवेदी ने बताया कि नाटक में मनोरंजन के साथ-साथ पारिवारिक एकता का संदेश भी दिया गया है। कलाकार - नाटक में कलाकारों की भूमिका में राजमणि तिवारी, सीमा रानी झा, कृष्णामिश्रा, योगेन्द्र द्विवेदी, खुशी मिश्रा, अखिल तिवारी और श्रेया सोनी शामिल हैं।

18 जुलाई को आएंगे युवक कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। जिला युवा कांग्रेस कमेटी सीधी के अध्यक्ष देवेंद्र सिंह दादू ने प्रेस विज्ञप्ति के माध्यम से बताया कि 18 जुलाई को आयोजित सत्याग्रह, धरना अजय सिंह राहुल पूर्व नेता प्रतिपक्ष एवं मितेंद्र दर्शन सिंह अध्यक्ष मध्य प्रदेश युवा कांग्रेस के नेतृत्व में आयोजित है। जिसकी तैयारी बैठक जिला युवा कांग्रेस कमेटी सीधी द्वारा आगामी 14 जुलाई रविवार 2024 को 11 बजे जिला मुख्यालय स्थित कांग्रेस कार्यालय जवाहर कांग्रेस भवन में नीट परीक्षा में हुई धांधली, नर्सिंग घोटाले के साथ ही जिले के स्थानीय मुद्दों को लेकर शासन प्रशासन को घेरने की रूपरेखा बनाने हेतु एक संगठनात्मक बैठक का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें जिला अध्यक्ष ने युवा कांग्रेस कमेटी के समस्त पदाधिकारीगण, पूर्व पदाधिकारीगण, कार्यकर्ताए एवं संगठन के अन्य विभागों के पदाधिकारी से उक्त मीटिंग में समय से पहुंचने की अपील की है। श्री सिंह ने कहा कि झूठ बोलकर शासन सत्ता में काबिज हुई भाजपा की यह सरकार जिन वादों को करके चुनावी रण में उतरे थे, चुनाव जीतने के बाद उनमें से कोई एक वादा पूरा नहीं कर पा रहे। जनता में आक्रोश है, जनता संगठन के साथ मिलकर सरकार के खिलाफ मुखर होने हेतु तत्पर हैं।

नगर पालिका के कर अधिभार देय में मिलेगी विशेष छूट

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। मिनी अग्रवाल सीएमओ नगर पालिका परिषद सीधी ने बताया कि मध्यप्रदेश शासन नगरीय विकास एवं आवास विभाग मंत्रालय, भोपाल का पत्र क्र. एफ 6-22/2012/18-3 भोपाल, दिनांक 04.07.2024 के अनुक्रम में आयुक्त, नगरीय प्रशासन एवं विकास म.प्र. भोपाल के प्रस्ताव दिनांक 25.06.2024 अनुसार दिनांक 11.05.2024 को आयोजित नेशनल लोक अदालत के दिन लोकसभा निर्वाचन आदर्श आचरण संहिता प्रभावशील होने के कारण समस्त नगर पालिक निगम/नगरपालिका परिषद्/नगर परिषदों में करों एवं गैर करों के अधिभार में देय छूट का लाभ नागरिकों को नही दिया जा सका तथा इस कारण प्रथम त्रैमास के लिये निर्धारित लक्ष्य अनुरूप राजस्व राशि वसूली की पूर्ति भी नही हो पाई है। उपरोक्त परिस्थितियों को दृष्टिगत रखते हुए मध्यप्रदेश नगर पालिका अधिनियम, 1961 की धारा 130, 131 तथा 132 में निहित शक्तियों को उपयोग में लाते हुये राज्य शासन एतद् द्वारा संपत्तिकर, जलकर एवं उपभोक्ता प्रभार के मात्र अधिभार में दिनांक 13.07.2024 (एक दिन) की विशेष छूट प्रदान की गयी है। जिसके तहत सम्पत्तिकर, जलकर वकायादार अधिभार में छूट प्रप्त कर सकतें है।

पुलिस अधीक्षक ने जनरल परेड का किया निरीक्षण

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। पुलिस विभाग में अनुशासन बनाये रखने के लिये नियमित परेड का महत्वपूर्ण योगदान है। पुलिस फोर्स में परेड को अनुशासन का जड़ माना जाता है परेड होने से पुलिस फोस में अनुशासन के साथ ही एक साथ टीम के रूप में कार्य करने की क्षमता बढ़ती है। इसी तरताम्य में शुक्र वार को रक्षित निरीक्षक वीरेंद्र कुमरे द्वारा परेड निरीक्षण हेतु पुलिस लाईन स्थित परेड ग्राउंड में प्लाटूनो को खडा किया गया तत्पश्चात सुबह 6 बजे पुलिस अधीक्षक के आगमन पर आरआई ने पुलिस अधीक्षक को परेड की सलामी दी।

इसके पश्चात पुलिस अधीक्षक द्वारा प्लाटून वार तैयार परेड का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान पुलिस अधीक्षक ने जवानों की वेशभूषा, दाढ़ी कटिंग, उनके खड़े होने की दशा और वेपन का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान जनरल परेड में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक अरविन्द श्रीवास्तव, डीएसपी मुख्यालय गायत्री तिवारी, एसडीओपी चुरहट आशुतोष द्विवेदी, रक्षित निरीक्षक वीरेंद्र कुमरे, थाना प्रभारी कोतवाली, थाना प्रभारी रामपुर नैकिन, थाना प्रभारी अमिलिया, थाना प्रभारी अजाक, महिला थाना प्रभारी, 10 उपनिरीक्षक, 13 सहायक उप निरीक्षक, प्रधान आरक्षक, आरक्षक 86 सहित पुलिस लाईन, थानो, पुलिस अधीक्षक कार्यालय में लगे 114 अधिकारी कर्मचारी उपस्थित रहें।

पुलिस अधीक्षक ने किया सम्मानित: पुलिस अधीक्षक डॉ.रविन्द्र वर्मा भापुसे द्वारा परेड पर उपस्थित अधिकारी कर्मचारियों का निरीक्षण करते हुये अच्छे टर्नाउट वाले कर्मचारियो को प्रोत्साहित करते हुये पुरूस्कृत किया गया तथा जिनका टर्नआउट खराब था उनको भविष्य के लिए चेतावनी दी गई। अंत में सुबह 7 बजे परेड का मार्च पास्ट कर परेड का विसर्जन किया गया।

राजस्व निरीक्षक मझौली निलंबित

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। कलेक्टर स्वरोचिष सोमवंशी ने आदेश जारी कर धर्मदास गुप्ता राजस्व निरीक्षक रा.नि.मं. मझौली को तत्काल प्रभाव से निलंबित किया है। जारी आदेशानुसार धर्मदास गुप्ता राजस्व निरीक्षक रा.नि.मं. मझौली को कारण बताओ सूचना पत्र जारी कर जवाब चाहा गया था। किन्तु जबाव समाधानकारक नहीं पाये जाने के फलस्वरूप श्री गुप्ता को तत्काल प्रभाव से निलंबित किया गया है। निलंबन अवधि में श्री गुप्ता का मुख्यालय भू-अभिलेख कार्यालय सीधी नियत किया गया है।

मतदाता सूची का वार्षिक पुनरीक्षण कार्यक्रम स्थगित: उप जिला निर्वाचन अधिकारी राजेश शाही ने बताया कि मतदाता सूची के वार्षिक पुनरीक्षण 2024 की तैयारी हेतु प्रक्रिया एवं मतदाता सूची तैयार करने हेतु जारी किये गये कार्यक्रम को अपरिहार्य कारणों से स्थगित किया गया है।

एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत किया गया पौधरोपण

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्धन के प्रति जागरूकता लाने जिला विधिक सेवा प्राधिकरण जिला सीधी एवं वनविभाग के संयुक्त तत्वावधान में ग्राम पंचायत सिहौलिया में एक पेड़ मां के नाम प्रदेशव्यापी वृहद पौधरोपण अभियान के अंतर्गत विधानसभा क्षेत्र सिहावल के ग्रामपंचायत सिहावल में विधायक विश्वामित्र पाठक सहित न्यायाधीशगण एवं अधिकारियों द्वारा पौधरोपण किया गया। इस अभियान के तहत न्यायिक मजिस्ट्रेट प्रथम श्रेणी अभिषेक साहू एवं सोनू जैन, पुलिस अधीक्षक डॉ. रविंद्र वर्मा, वनमंडलाधिकारी क्षितिज कुमार, मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत राहुल धोटे, ओ पी त्रिपाठी द्वारा अभियान में सहभागिता कर पौधरोपण किया गया।

जिले में औसत वर्षा 162.6 मि.मी. दर्ज

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। अधीक्षक भू-अभिलेख ने बताया कि 12 जुलाई को सीधी जिले में 14.0 मि.मी. औसत वर्षा दर्ज की गई है। तहसील रामपुर नैकिन में 16.0 मि.मी., चुरहट में 2.0 मि.मी., गोपद बनास में 2.2 मि.मी., सिहावल में 9.4 मि.मी., बहरी में 10.6 मि.मी., मझौली में 42.0 मि.मी. और कुसमी में 16.0 मि.मी. वर्षा हुई है।

उल्लेखनीय है कि जिले में अब तक 162.6 मि.मी. औसत वर्षा दर्ज हुई है। 01 जून से 12 जुलाई तक तहसील रामपुर नैकिन में सर्वाधिक वर्षा 225.1 मि.मी. दर्ज की गई है। तहसील चुरहट में 111.8, गोपद बनास में 127.0, सिहावल में 142.8, बहरी में 131.8 मझौली में 218.0 मि.मी. और कुसमी में 182.0 मि.मी. औसत वर्षा हुई है जबकि गतवर्ष इसी अवधि में जिले में 188.8 मि.मी. औसत वर्षा दर्ज हुई थी। गतवर्ष की तुलना में इस वर्ष 26.2 मि.मी. औसत वर्षा कम हुई है।

लिनेस क्लब कामाख्या द्वारा सर्वाइकल कैंसर जागरूकता कार्यशाला का हुआ आयोजन

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। लिनेस क्लब कामाख्या द्वारा सर्वाइकल कैंसर जागरूकता कार्यशाला का आयोजन गुरूवार को न्यू मिश्रा नर्सिंग होम सीधी में आयोजित किया गया। इस महत्वपूर्ण कार्यशाला में क्षेत्र के प्रमुख चिकित्सकों और विशेषज्ञों ने हिस्सा लिया। कार्यक्र म की शुरुआत डॉक्टरों के परिचय के साथ हुई जिसमें लिनेस क्लब कामाख्या सीधी की अध्यक्ष डॉ. बीना मिश्रा, सचिव डॉ. सुनीता तिवारी, डॉ. तमिल, डॉ. रत्नेश मिश्रा, डॉ. राम तिवारी, डॉ.करनदीप तिवारी, डॉ रुचि सिंह और डॉ. रंजना शुक्ला ने विस्तार से जानकारी दी। मुख्य अतिथि डॉण् तमिल और शीला मिश्रा द्वारा दीप ज्योति प्रज्वलित कर कार्यक्र म का शुभारंभ किया गया। इस धार्मिक और सांस्कृतिक रीति.रिवाज ने कार्यक्रम को एक विशेष पहचान दी।

सर्वाइकल कैंसर की बुनियादी जानकारी, बीमारी के कारण, लक्षण और रोकथाम के उपायों पर चर्चा की गई। इसके बाद सर्वाइकल कैंसर पर विस्तृत प्रस्तुति दी गई, जिसमें गहराई से इस बीमारी के विभिन्न पहलुओं को समझाया गया। इस दौरान बेहतर समझ और लक्षणों की पहचान के लिए फोटोग्राफिक क्लिप्स भी दिखाए गए, जिससे उपस्थित लोगों को इस बीमारी के प्रारंभिक संकेतों को पहचानने में मदद मिली।

इस प्रकार सर्वाइकल कैंसर जागरूकता कार्यशाला ने स्थानीय समुदाय को इस गंभीर बीमारी के प्रति सचेत किया और उन्हें इसके लक्षणों को पहचानने और उचित समय पर इलाज करवाने के लिए प्रेरित किया। इस सफल आयोजन ने न केवल जागरूकता बढ़ाई, बल्कि लोगों को स्वस्थ जीवन जीने के लिए प्रोत्साहित भी किया।

कुसमी थाना प्रभारी ने लगाया एक पेड़ मां के नाम, ग्रामीणों को किया प्रेरित

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। जिले के आदिवासी अंचल कुसमी के अंतर्गत थाना परिसर मे जिला पंचायत सदस्य हीराबाई सिंह के साथ थाना प्रभारी उपनिरीक्षक भूपेश बैस ने वृक्षारोपण किया है। जहां एक पेड़ मां के नाम के तहत वृक्षारोपण का कार्य किया गया है और लोगों को हरा भरा प्रदेश और राष्ट्र बनाने का संकल्प दिलाया गया, इस दौरान सैकड़ो की संख्या में ग्रामींणो उक्त कार्य की सराहना की।

आयोजित कार्यक्रम में जिला पंचायत सदस्य हीराबाई सिहं थाना प्रभारी उप निरीक्षक भूपेश बैस, दशमतिया साहू पूर्व प्राचार्य डा ए एच अंसारी, आरक्षक रामेश्वर सिंह प्रधान आरक्षक अंजनी कुमार द्विवेदी प्रधान आरक्षक कमलेश प्रजापति आरक्षक शिवराम बैस आरक्षक प्रमोद गौड़ आरक्षक दिनकर दुबे आरक्षक धर्मेंद्र सिंह आरक्षक दिनेश सिंह प्रधान आरक्षक बालवीर निकले आरक्षक प्रकाश सिंह मौजूद रहें।

प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना की अंतिम तिथि 31 जुलाई

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। उप संचालक कृषि ने जानकारी देकर बताया है कि सीधी जिले के किसान 31 जुलाई 2024 तक अपनी खरीफ फसल का बीमा करा सकते हैं। प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के तहत किसान भाई जिले में एग्रीकल्चर इन्श्योरेंस कम्पनी ऑफ इण्डिया लिमिटेड के माध्यम से अपनी खरीफ फसलों का बीमा 31 जुलाई 2024 तक करा सकते है। ऋणी कृषको का सम्बंधित वित्तीय बैंक (संस्था) के माध्यम से फसल बीमा किया जाएगा। अऋणी कृषक सम्बन्धित बैंक से या वीमा अभिकर्ता (कम्पनी के तहसील प्रतिनिधि) एवं सी. एस. सी. अथवा स्वयं पीएम एफ वी बाय पोर्टल के माध्यम से अपनी फसलों का वीमा करा सकते हैं।

उप संचालक किसान कल्याण तथा कृषि विकास जिला सीधी ने बताया कि खरीफ फसलो का बीमा कराने के लिए भू-अधिकार पुस्तिका या बी 1, आधार कार्ड बैंक पासबुक तथा फसल बुवाई प्रमाण पत्र प्रस्तुत करना होगा। फसल बीमा कराये जाने पर प्राकृतिक आग (आकाशीय बिजली गिरना बादल, फटना, तूफान, ओलावृष्टि, चक्र वात, बाढ़, जल भरावं, भू-स्खलन, सूखा, कीट व्याधियां इत्यादि से फसल नुकसान होने पर किसान भाई फसल वीमा का लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

फसल बीमा के संबंध में किसान भाई एग्रीकल्चर इश्योरेस कम्पनी ऑफ इण्डिया लिमिटेड के टोल फ्री नम्बर 18005707115 पर या किसान कॉल सेन्टर (कृषि रक्षक हेल्पलाइन) 14447 अथवा सीधी जिले में पदस्थ फसल बीमा कम्पनी के प्रतिनिधि से सम्पर्क कर सकते हैं। प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के तहत फसल बीमा कराने के लिए सीधी जिले हेतु पटवारी हल्का स्तर पर धान सिंचित के लिए प्रीमियम राशि 817.20 रूपये प्रति हेक्टेयर, धान अधिचित के लिए 617.10 का प्रतिहेक्टेयर तुअर अरहर के लिए 608.22 रुपये प्रति हेक्टेयर मक्का के लिए 597.12 रुपये प्रति हेक्टेयर, तहसील स्तर पर ज्वार के लिए 478.46 रुपये प्रति हेक्टेयर पर, तिल के लिए 471.94 रुपये, कोदो कुटकी के लिए 316.06 रुपये जिला स्तर की फसल पर उड़द के लिए 434.7 रुपये प्रति हेक्टेयर मुंग के लिए 426.56 रुपये प्रति हेक्टेयर प्रीमियम राशि है जो की बीमित राशि का 2 प्रतिशत है। अधिसूचित फसलों के बीमा के लिए अपने बैंक या सीएससी. सेंटर अथवा बीमा अभिकर्ता से बीमा करा कर रसीद प्राप्त कर सकते हैं। फसल बीमा कम्पनी के प्रतिनिधि से सम्पर्क करने के लिए 9826559390 पर कॉल कर सकते है अथवा कृषि विभाग के ब्लॉक कार्यालय में जाकर सम्पर्क कर सकते हैं।

शांतिपूर्ण तरीके से मनायें मोहर्रम का त्यौहार

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। आगामी 17 जुलाई को मोहर्रम का त्यौहार शांतिपूर्ण तरीके से मनाये जाने हेतु शांति समिति की बैठक गुरुवार को अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक अरविंद श्रीवास्तव तथा उपखण्ड अधिकारी गोपद बनास नीलेश शर्मा की उपस्थिति में आयोजित की गई। उन्होंने उपस्थित गणमान्य नागरिकों को मोहर्रम पर्व की शुभकामनाएं दी। उन्होंने कहा कि जिले में मोहर्रम का त्यौहार मनाये जाने की पूर्व परंपरा रही है। सभी लोग आपसी भाईचारे के साथ शांतिपूर्ण ढंग से सभी त्यौहार मनाते हैं। पुलिस विभाग की ओर से उक्त त्यौहार शांतिपूर्ण ढंग से मनाने हेतु आवश्यक पुलिस व्यवस्थाएं सुनिश्चित की जावेगी।

बैठक में दिनांक 16.07.2024 को मार्गो में चूना डलवाने, ईदगाह के आस-पास नालियों की सफाई, रोड से ठेला हटवाना आदि की व्यवस्था मुख्य नगर पालिका अधिकारी सीधी को सौंपी गई है। ईदगाह के आस-पास सुरक्षा व्यवस्था की जिम्मेदारी अतिरिक्त पुलिस अधीक्षकध्नगर निरीक्षक कोतवाली को सौंपी गई तथा अनाधिकृत रूप से वाहन प्रवेश न करें इसकी जिम्मेदारी यातायात पुलिस को सौंपी गई।

सीधी शहर के अतिरिक्त ग्रामीण अंचलो में सेमरिया, अमिलिया, कमर्जी, मडवास, चुरहट, सिहावल, हिनौती, हटवा, रामपुर नैकिन में मोहर्रम में नमाज अदा की जायेगी। बैठक में सभी उपखण्ड अधिकारी एवं थाना प्रभारी को अपने-अपने क्षेत्रों में मुख्य कार्यपालन अधिकारी जनपद पंचायत के माध्यम से समुचित शांति व्यवस्था बनाये रखने हेतु निर्देशित किया गया। समस्त उपखण्ड अधिकारी को निर्देशित किया गया है कि अपने -अपने क्षेत्र में जहां नमाज अदा की जाती है एवं ताजिया यात्रा का आयोजन किया जाता है उन स्थानों पर पुलिस थाना के सहयोग से शांतिपूर्ण त्यौहार मनाये जाने की व्यवस्था करें। बैठक में शांति समिति के सदस्य एवं संबंधित विभागीय अधिकारी उपस्थित रहे।

घायलों के मद्दगार को किया जायेगा सम्मानित

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। उच्च न्यायालय द्वारा सड़क दुर्घटनाओं में व्यापक रोकथाम के लिए एवं सड़क दुर्घटना में घायलों की जिंदगी बचाने के लिए गुड सेमिरिटन योजना का प्रचार प्रसार अधिक से अधिक किए जाने का आदेश दिया गया है। इस तारतम्य में पुलिस अधीक्षक सीधी डॉ. रविन्द्र वर्मा द्वारा गुड सेमेरिटन योजना संबंधित जानकारी आम जनमानस तक पहुंचाने हेतु यातायात थाना प्रभारी सहित जिले के सभी संबंधितो को निर्देशित किया है। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक अरविंद श्रीवास्तव के मार्गदर्शन में यातायात थाना प्रभारी उनि. डी.डी. सिंह द्वारा इस योजना एक नेक व्यक्ति के प्रचार प्रसार हेतु पोस्टर, फ्लेक्स तैयार कर विभिन्न स्थानों में लगवाए जा रहे हैं तथा पंपलेट वितरित किए जा रहे हैं। आम जनमानस को इस योजना के बारे में पता चल सके और सड़क दुर्घटनाओं में घायल व्यक्तियों की मदद कर नेक व्यक्ति बनने का अवसर प्राप्त हो सके। योजना के प्रचार प्रसार हेतु आज 12 जुलाई 2024 को उप पुलिस अधीक्षक सीधी श्रीमती गायत्री तिवारी के नेतृत्व में थाना प्रभारी कोतवाली निरीक्षक अभिषेक उपाध्याय, महिला थाना प्रभारी निरीक्षक रीता त्रिपाठी एवं यातायात थाना प्रभारी उनि डीडी सिंह द्वारा सामूहिक रूप से उत्कृष्ट विद्यालय सीधी में एवं थाना प्रभारी अमिलिया द्वारा काशी हायर सेकेण्डरी स्कूल अमिलिया में जागरुकता कार्यक्रम आयोजित किया जाकर गुड सेमेरिटन के बारे में बताया गया।

गोल्डन ऑवर में करें मद्द : पुलिस अधीक्षक के द्वारा घायलों को त्वरित मदद मिल सके इस उद्देश्य के साथ जिला पुलिस बल को निर्देशित किया गया है कि इस योजना का अधिक से अधिक प्रचार प्रशार करें। इस योजना का मुख्य उद्देश्य सड़क दुर्घटनाओं में घायल व्यक्तियों को गोल्डन ऑवर में अस्पताल ट्रामा सेंटर तत्परता के साथ पहुंचाकर उसकी जान बचाना है। ताकि सड़क दुर्घटनाओं में होने वाली मृत्यु का आंकड़ा भारत देश में कम किया जा सके।

विचार

अमेरिकी राजनीति में बूढ़ों की भरमार क्यों है?

इस साल अमेरिका में राष्ट्रपति चुनाव होने हैं। माना जा रहा है कि वर्तमान राष्ट्रपति जो बाइडन का मुकाबला उनके पुराने प्रतिद्वंद्वी डोनाल्ड ट्रंप से होगा। लेकिन जिस तरह बाइडन के मानसिक स्वास्थ्य को लेकर तमाम तरह की खबरें आ रही हैं उससे उनका चुनाव लड़ना संदिग्ध लग रहा है। हालांकि बाइडन अड़े हैं कि वह राष्ट्रपति का चुनाव लड़ेंगे और एक बार फिर ट्रंप को हरा कर दिखाएंगे लेकिन अब उनकी डेमोक्रेटिक पार्टी भी इस पक्ष में दिख रही है कि बाइडन राष्ट्रपति की रेस से बाहर हो जायें। हाल में आयोजित बहस के दौरान ट्रंप से मुकाबला करते हुए बाइडन पिछड़ गये थे उसको देखते हुए अमेरिका में यह भावना आ रही है कि किसी और को आगे किया जाये। देखना होगा कि बाइडन की पार्टी का अंतिम निर्णय क्या होता है। लेकिन दुनिया भर में इस समय जो बहस चल रही है वह यह है कि दुनिया के सबसे पुराने लोकतंत्र में क्या कोई युवा राष्ट्रपति पद के योग्य नहीं है? हम आपको बता दें कि बात सिर्फ बाइडन की ही नहीं है क्योंकि डोनाल्ड ट्रंप भी उम्रदराज हैं। इसलिए सवाल उठ रहा है कि क्यों किसी युवा को आगे नहीं किया जाता? वैसे हम आपको बता दें कि ऐसा नहीं है कि अमेरिका में सिर्फ राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार ही बूढ़े हैं। अगर आप अमेरिकी संसद यानि कांग्रेस पर नजर डालेंगे तो पाएंगे कि उसके लगभग 20त्न सदस्य 70 या उससे अधिक उम्र के हैं, जबकि लगभग 6त्न सदस्य 40 से कम उम्र के हैं। कई हाई-प्रोफाइल अमेरिकी राजनेताओं की उम्र 80 के करीब या उससे अधिक है, जिसमें दोनों पार्टियों के राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार भी शामिल हैं। सवाल उठता है कि अमेरिकी राजनीति में उम्रदराज लोगों का ही बोलबाला क्यों है? सवाल यह भी उठता है कि अमेरिकी कांग्रेस में युवा पीढ़ी का प्रतिनिधित्व इतना कम क्यों है? देखा जाये तो ऐसा प्रतीत होता है कि अमेरिकी राजनीतिक प्रणाली युवाओं के लिए बनाई ही नहीं गयी है। अगर कोई युवा अमेरिकी कांग्रेस का चुनाव लड़ना चाहता है तो उसके पास सबसे बड़ी चुनौती यह होती है कि वह भारी भरकम खर्च का जुगाड़ कैसे करेगा? जबकि उम्रदराज और पहले से राजनीति कर रहे नेताओं के पास अपना अच्छा नेटवर्क होता है जिसके चलते वह अपने लिए चुनाव अभियान आसानी से चला सकते हैं और चुनाव में खर्च के लिए अच्छा खासा फंड भी एकत्रित कर लेते हैं। हम आपको बता दें कि अमेरिकी राजनीति में शानदार चुनाव अभियान बहुत मायने रखते हैं। दूसरी ओर युवाओं के लिए राजनीति में आने का मतलब है कामकाज से कम से कम एक साल की छुट्टी। यदि कोई पहले से ही अमीर है, तो चुनाव लड़ना उसके लिए कोई बड़ी बात नहीं होती, यदि उसके पास अच्छी खासी बचत है तब भी वह अपना काम चलाते हुए अपने चुनाव अभियान को आगे बढ़ा लेता है लेकिन अगर किसी के पास धन नहीं है तो उसे कोई नहीं पूछता। इसीलिए युवा अमेरिकी कांग्रेस तक पहुंचने की दौड़ में शामिल नहीं हो पाते। इसके अलावा, संभावित युवा उम्मीदवारों को पैसे के अलावा समय की भी कमी का सामना करना पड़ता है। युवाओं के लिए स्थिर कॅरियर, परिवार शुरू करना और आर्थिक सुरक्षा प्राथमिकता होते हैं।

वित्तीय स्थिरता प्रतिवेदन के अनुसार भारत की वित्तीय प्रणाली बहुत मजबूत है

प्रह्लाद सबनानी

जून 2024 के अंतिम सप्ताह में, 27 जून 2024 को, भारतीय रिजर्व बैंक ने वित्तीय स्थिरता प्रतिवेदन जारी किया है। यह प्रतिवेदन वर्ष में दो बार, 6 माह के अंतराल पर, जारी किया जाता है। इस प्रतिवेदन में यह बताया गया है कि भारतीय अर्थव्यवस्था और भारत की वित्तीय प्रणाली लगातार मजबूत बनी हुई है और बेहतर तुलन पत्र के आधार पर, भारत के बैंक एवं वित्तीय संस्थान लगातार ऋण विस्तार के माध्यम से देश की आर्थिक गतिविधियों में तेजी लाने में अपनी प्रभावी भूमिका का सफलतापूर्वक निर्वहन कर रहे हैं। 31 मार्च 2024 को समाप्त वित्तीय वर्ष में भारत के अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों का पूंजी पर्याप्तता अनुपात 16.8 प्रतिशत का रहा है तथा सकल अनर्जक आस्ति अनुपात पिछले कई वर्षों के सबसे निचले स्तर अर्थात 2.8 प्रतिशत पर एवं निवल अनर्जक आस्ति अनुपात केवल 0.6 प्रतिशत पर आ गया है जो अपने आप में एक रिकार्ड है।

न केवल अनुसूचित वाणिज्यिक बैंक मजबूत बने हुए हैं अपितु गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियां (एनबीएफसी) भी स्वस्थ बनी हुई हैं, जिनका पूंजी पर्याप्तता अनुपात 26.6 प्रतिशत, सकल अनर्जक आस्ति अनुपात 4.0 प्रतिशत और आस्तियों पर प्रतिलाभ 3.3 प्रतिशत रहा है। पूंजी पर्याप्तता अनुपात का मजबूत स्थिति में रहने का आश्य यह है कि इन बैंकों के पास पर्याप्त मात्रा में पूंजी उपलब्ध है और इन बैंकों में किसी प्रकार की आर्थिक परेशानी आने पर यह बैंक सफलतापूर्वक उस आर्थिक परेशानी का सामना कर सकते हैं। वहीं दूसरी ओर, अनर्जक आस्ति अनुपात का सबसे कम स्तर पर आने का आश्य यह है कि बैकों द्वारा प्रदान किए जा रहे ऋणों की अदायगी समय पर हो रही है एवं इन ऋणों पर पर कोई दबाव दिखाई नहीं दे रहा है। उक्त प्रतिवेदन में भारतीय रिजर्व बैंक ने भारतीय अर्थव्यवस्था में पनप रहे कुछ जोखिमों की ओर भी इशारा किया है। हालांकि वैश्विक स्तर पर कई विकसित देशों द्वारा अभी भी सख्त मौद्रिक नीति का अनुपालन किया जा रहा है एवं इन देशों द्वारा ब्याज दरों को अभी भी उच्च स्तर पर बनाए रखा गया है क्योंकि मुद्रा स्फीति की दर इन देशों में स्वीकार्य स्तर तक नीचे नहीं आ पाई है। भारत के लिए जरूर इस प्रकार के जोखिम कमजोर पड़े हैं क्योंकि भारत में मुद्रा स्फीति की दर को नीचे लाने में सफलता मिली है। परंतु, भारत में एक तो विशेष रूप से कोविड महामारी के बाद से नागरिकों पर ऋण का अतिरिक्त बोझ बड़ा है और दूसरे भारतीय नागरिकों की वित्तीय बचत की दर में कमी आई है। उक्त प्रतिवेदन में विशेष रूप से इन दो जोखिमों की ओर ध्यान दिलाया गया है। भारतीय रिजर्व बैंक के अनुसार वित्तीय वर्ष 2022-23 में नागरिकों की बचत दर घटकर सकल घरेलू उत्पाद के 18.4 प्रतिशत तक नीचे आ गई है जो वर्ष 2013 से 2022 के बीच में औसतन 20 प्रतिशत की रही है। इसी प्रकार, एक अन्य मानक के अनुसार, वर्ष 2013 से 2022 के बीच भारतीय नागरिक अपनी कमाई का औसतन 39.8 प्रतिशत भाग बचत करते थे परंतु वित्तीय वर्ष 2022-23 में यह भाग घटकर 28.5 प्रतिशत तक नीचे आ गया है। बचत, दरअसल, दो प्रकार की होती है, एक वित्तीय बचत और दूसरे, सम्पत्ति निर्मित करने हेतु बचत। भारतीय रिजर्व बैंक के अनुसार, भारतीय नागरिकों की वित्तीय बचत जरूर कम हुई है परंतु सम्पत्ति निर्मित करने हेतु की गई बचत में वृद्धि दृष्टिगोचर है। जैसे, मकान बनाने हेतु एवं कार खरीदने हेतु की गई बचत को सम्पत्ति निर्मित करने हेतु की गई बचत की श्रेणी में रखा जाता है। भारत में हाल ही के वर्षों में सम्पत्ति निर्मित करने हेतु बचत का रुझान बहुत तेज गति से आगे बढ़ा है। आवास एवं कार आदि जैसी सम्पत्तियां खरीदने हेतु भारत में मध्यवर्गीय परिवार अपनी बचत के साथ ही बैंकों से ऋण लेकर भी इन सम्पत्तियों का निर्माण कर रहे हैं। इससे अर्थव्यवस्था के चक्र में भी तेजी दिखाई देने लगी है क्योंकि मकान बनाने के लिए स्टील, सिमेंट, आदि पदार्थों की खपत भी बढ़ रही है एवं इन उत्पादों का उत्पादन भी विनिर्माण इकाईयों द्वारा अधिक मात्रा में किया जा रहा है, इससे देश में रोजगार के अवसर भी निर्मित हो रहे हैं। कुल मिलाकर, इससे देश के अर्थ चक्र में तेजी दिखाई देने लगी है। साथ ही, वित्तीय बचत कम इसलिए भी हो रही है क्योंकि अब देश का पढ़ा लिखा नागरिक वित्तीय रूप से अधिक साक्षर हो गया है एवं अब यह स्थिति समझने लगा है कि बैंकों एवं पोस्ट ऑफिस में बचत करने पर मिल रहे ब्याज की तुलना में शेयर (पूंजी) बाजार में निवेश करने तथा सोने एवं चांदी जैसे पदार्थों में निवेश करने से अधिक आय का अर्जन सम्भव होता दिखाई दे रहा है। साथ ही, भूमि का टुकड़ा खरीदकर उस पर भवन का निर्माण कर तुलनात्मक रूप से अधिक आय का अर्जन किया जा सकता है। अत: बैकों एवं पोस्ट ऑफ़िस के स्थान पर अब देश के नागरिक देश के पूंजी बाजार में अपनी बचत का निवेश करने लगे हैं। दूसरे, मध्यवर्गीय परिवार अब अपने बच्चों की शिक्षा एवं स्वास्थ्य सुविधाओं पर अधिक ध्यान देने लगे हैं। इससे, इनकी कुल आय का अधिक प्रतिशत अब इन मदों पर खर्च होता दिखाई दे रहा है, इससे अंतत: इन परिवारों की बचत में भी कमी दृष्टिगोचर हो रही है। इसी कारण के चलते नागरिकों की शुद्ध वित्तीय बचत में 11.3 प्रतिशत की भारी भरकम गिरावट दर्ज हुई है जो वर्ष 2022-23 में 28.5 प्रतिशत की रही है और पिछले 10 वर्षों के दौरान औसतन 39.8 प्रतिशत की रही थी। कोरोना महामारी के दौरान चूंकि पूरे देश में लॉकडाउन लगाया गया था अत: इस दौरान भारत में घरेलू बचत दर बढ़कर 51.7 प्रतिशत तक पहुंच गई थी। परंतु कोरोना महामारी के बाद जैसे ही लॉकडाउन को हटाया गया, नागरिकों ने अपने खर्चों में वृद्धि करना शुरू कर दिया एवं आस्तियों में निवेश भी करना शुरू किर दिया था, इससे घरेलू बचत की दर में भारी भरकम गिरावट दर्ज हुई है। अब तो देश के नागरिक आस्तियों में निवेश करने के उद्देश्य से बैकों से ऋण प्राप्त करने में भी किसी प्रकार की कठिनाई का अनुभव नहीं कर रहे हैं। इस सम्बंध में भारतीय बैकों ने भी अपने नियमों को शिथिल किया है। इससे भारत में ऋण में वृद्धि दर लगातार 15 प्रतिशत से ऊपर बनी हुई है वहीं जमाराशि में वृद्धि दर लगातार कम होती जा रही है जिसका प्रभाव वृद्धात्मक ऋण- जमा अनुपात पर भी पड़ता दिखाई दे रहा है जो अब 100 प्रतिशत के आसपास पहुंच गया है। एक और दिलचस्प पहलू यह भी उभरकर सामने आया है कि अब पर्यावरण में हो रहे परिवर्तन को भी वित्तीय जोखिम की तरह ही माना जा रहा है। अर्थात, अब जलवायु जोखिम एवं साइबर जोखिम को भी गम्भीर खतरे के रूप में देखा जा रहा है। आगे आने वाले समय में इन दोनों जोखिमों की वजह से भारतीय वित्तीय प्रणाली पर भारी दबाव पड़ सकता है। जलवायु परिवर्तन के चलते तो भारत की मौद्रिक नीति पर भी प्रभाव पड़ सकता है जिससे अंतत: वित्तीय तंत्र के लिए भी जोखिम बढ़ सकता है।

जम्मू क्यों है आतंक का नया कश्मीर?

जम्मू -कश्मीर के जम्मू संभाग में हाल के महीनों में सिलसिलेवार आतंकवादी हमले हुए हैं। सोमवार को कठुआ के उत्तर में घने जंगली इलाके और डोडा के दक्षिण में (जहां मंगलवार को एक नई मुठभेड़ हुई) सेना के काफिले पर एक और हमला हुआ, जिसमें 5 सैनिक मारे गए। इससे पिछले लगभग एक वर्ष में हुई भारी जनहानि में वृद्धि हुई है। सवाल यह है कि अब ऐसे आतंकी हमले क्यों बढ़ रहे हैं? क्या 2019 के बाद पाक प्रायोजित आतंकी समूहों की कमर टूट नहीं गई? जम्मू में क्यों बढ़े हैं आतंकी हमले? = आतंकवाद पानी की तरह है। यह वहां बहता है जहां प्रतिरोध कम होता है। कई वर्षों तक पाकिस्तान ने कश्मीर पर ध्यान केंद्रित किया क्योंकि यहीं पर उसका ध्यान हमेशा से रहा है। लेकिन जब भारतीय सुरक्षा बलों (एस.एफ.) और खुफिया एजैंसियों ने 2019 के बाद कश्मीर में आतंकी नैटवर्क को प्रभावी ढंग से बेअसर कर दिया, तो पाकिस्तान यहां एक हितधारक के रूप में अपनी प्रासंगिकता खोने लगा। हाई-प्रोफाइल आतंकवादी गतिविधि की कमी, हिंसा के निम्न स्तर और यहां तक कि सड़क पर प्रदर्शनों की अनुपस्थिति का मतलब जम्मू-कश्मीर पर अपनी पकड़ प्रदर्शित करने की पाक क्षमता में कमी है। अप्रासंगिक होने के लिए पाकिस्तान ने 35 वर्षों में बहुत अधिक निवेश किया है। यदि यह अब अलगाववाद को प्रायोजित करना जारी रखने का इरादा प्रदर्शित नहीं करता है, तो बाद के वर्षों में किसी भी प्रकार के प्रतिरोध को पुनर्जीवित करना बेहद मुश्किल होगा। भारत के निस्संदेह उत्थान के साथ पाकिस्तान लगभग सभी क्षेत्रों में उभरती हुई एक विषमता देख सकता है। इसका मतलब यह है कि समय के साथ, भारत का आर्थिक विकास अनिवार्य रूप से जम्मू-कश्मीर के एकीकरण की ओर ले जाएगा। पाकिस्तान का लक्ष्य जम्मू को परेशान करके इस महत्वाकांक्षा को पूरा करना है।

राष्ट्रपति एर्दोगन ने सिर्फ सीरियाई संघर्ष का इस्तेमाल किया

मनीष राय

पिछले कुछ समय से सीरिया के साथ मेल-मिलाप की दिशा में तुर्की के कदमों को लेकर सीरिया के विपक्ष के कब्जे वाले क्षेत्रों में तनाव बढ़ रहा है। तुर्की में सीरियाई लोगों के खिलाफ हालिया हिंसा ने उत्प्रेरक के रूप में काम किया और उत्तर-पश्चिमी सीरिया के विपक्ष के कब्जे वाले इलाकों में जवाबी दंगों को जन्म दिया। सैकड़ों सीरियाई प्रदर्शनकारी, जिनमें से कुछ हथियारबंद थे, विरोध में सड़कों पर उतर आए। कुछ लोगों ने तुर्की के झंडे फाड़ दिए, पत्थर फेंके और तुर्की के वाणिज्यिक ट्रकों को निशाना बनाया। हाल के दिनों में गुस्सा उबल पड़ा है और सड़कों पर तुर्की विरोधी भावनाएं साफ नजर आ रही हैं। उत्तरी सीरिया में तुर्की-नियंत्रित क्षेत्रों में कई लोग तुर्की सुरक्षा बलों की वापसी की मांग कर रहे हैं, जिससे पहले से ही अस्थिर स्थिति और खराब हो गई है। कुछ स्थानों पर तुर्की-प्रशिक्षित सीरियाई विपक्षी बलों ने तुर्की के बख्तरबंद वाहनों पर गोलीबारी की, जिससे तुर्की को नियंत्रण बनाए रखने के लिए क्षेत्र में अतिरिक्त सैनिकों को तैनात करना पड़ा। युद्ध पर नजर रखने वाली संस्था सीरियन ऑब्जर्वेटरी ऑफ ह्यूमन राइट्स के अनुसार, टकराव के परिणामस्वरूप तुर्क सैनिकों के साथ गोलीबारी में कई लोग मारे गए। तुर्की के राष्ट्रपति एर्दोगन ने हाल ही में कहा था कि सीरिया के साथ संबंध स्थापित न करने का कोई कारण नहीं है। उन्होंने पत्रकारों से बात करते हुए इस बात पर भी जोर दिया कि अंकारा की सीरिया के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप करने की कोई योजना या लक्ष्य नहीं है। उन्होंने जो कहा वह 2011 में सीरियाई संघर्ष शुरू होने के बाद से सीरिया में तुर्क जो कर रहे हैं उसके बिल्कुल विपरीत है। अब कई वरिष्ठ सीरियाई विपक्षी नेताओं का मानना है कि अंकारा ने सीरियाई क्रांति से नाता तोड़ लिया है। सीरियाई संघर्ष की शुरुआत के बाद से तुर्की सीरियाई विपक्षी गुटो के मुख्य समर्थकों में से एक रहा है और उसने सीरियाई राष्ट्रपति बशर अल-असद को उखाड़ फेंकने का समर्थन किया है। लेकिन, हकीकत में तुर्की ने हमेशा अपने निहित स्वार्थों की पूर्ति के लिए सीरियाई संघर्ष का इस्तेमाल किया। तुर्की के राष्ट्रपति एर्दोगन ने 2016 के बाद से कई मौकों पर सीरियाई विपक्ष को बेचा, जिससे असद शासन को तुर्की समर्थित समूहों द्वारा नियंत्रित कई क्षेत्रों पर फिर से कब्जा करने की अनुमति मिल गई है। सीरियाई गृहयुद्ध में अंकारा की प्रारंभिक नीति स्पष्ट रूप से उदारवादी सीरियाई विपक्ष के समर्थन में थी। हालाँकि, तुर्की ने 2012 और 2013 में तुर्की के रास्ते सीरिया जाने वाले विदेशी जेहादी लड़ाकों के लिए अपनी सीमाएँ खोल दीं और आईएसआईएस सहित चरमपंथी समूहों को बढ़ावा दिया। आईएसआईएस के उद्भव ने अंतर्राष्ट्रीय समुदाय को परेशान कर दिया और बदले में उन्होंने तुर्की समर्थित विद्रोहियों के लिए समर्थन कम कर दिया और कुर्द पीपुल्स डिफेंस यूनिट्स (वाईपीजी) जैसे इस्लामिक स्टेट से लड़ने वाले समूहों की मदद करने पर ध्यान केंद्रित किया। इसके बाद तुर्की ने सीरिया में अपनी नीति को फिर से समायोजित किया और ज्यादातर अरब सीरियाई विद्रोहियों को कुर्दों से लड़ने के लिए प्रेरित किया। पूरे संघर्ष के दौरान फ्री सीरियन आर्मी (एफएसए) एक सशस्त्र विपक्षी समूह रहा है जो ज्यादातर तुर्की के साथ जुड़ा हुआ है और सबसे ज्यादा उस पर निर्भर है। 2015 के बाद, जब तुर्की ने उत्तरी सीरिया में बफर जोन बनाकर पीवाईडी/वाईपीजी के नेतृत्व वाले सीरियाई कुर्दों को रोकने की अपनी रणनीति पर कदम बढ़ाया।

इसने अपने हाइब्रिड सैन्य अभियानों में एफएसए समूहों को अनियमित बलों के रूप में इस्तेमाल किया- ऑपरेशन यूफ्रेट्स शील्ड, 2016, ऑपरेशन ओलिव ब्रांच, 2018, और ऑपरेशन पीस स्प्रिंग, 2019। इन समूहों का नाम बदलकर सीरियाई राष्ट्रीय सेना (एसएनए) कर दिया गया। तुर्की सैन्य अभियानों में अपनी भागीदारी के बदले में तुर्की एसएनए को प्रशिक्षण, वेतन और हथियार प्रदान करता है। ये समूह तुर्की के साथ सहयोग करने और यूफ्रेट्स नदी के पूर्व में कुर्द बलों के खिलाफ तुर्की के अभियानों का समर्थन करने में भी सहज थे। बदले में उन्हें उत्तर-पश्चिमी सीरिया के कुछ हिस्सों में अपनी स्थिति मजबूत करने और उनकी रक्षा करने में तुर्की का समर्थन मिल रहा था। इतना ही नहीं, तुर्की ने इन सीरियाई विपक्षी समूहों को लीबिया और नागोर्नो-काराबाख जैसी जगहों पर भी इस्तेमाल किया। दुर्भाग्य से, इन समूहों को यह एहसास नहीं हुआ कि वे तुर्की के हाथों में खेल रहे हैं और यह केवल समय की बात है कि उन्हें अंकारा द्वारा भी बेच दिया जाएगा। तुर्की ने सीरिया में फूट डालो और राज करो की नीति अपनाई जिसमें आवश्यकताओं के अनुसार उन्होंने सीरियाई लोगों को एक दूसरे के खिलाफ मैदान में उतारा। संक्षेप में, अपने लाभ के लिए सीरियाई गृहयुद्ध में %क्रांतिकारी% कारण को पुनर्जीवित करने की तुर्की की दृष्टि को सीरियाई विपक्षी समूहों पर संस्थागत नियंत्रण के माध्यम से प्रभावी ढंग से क्रियान्वित किया गया है। आज तुर्की केवल अपने बड़े रणनीतिक हितों की पूर्ति के लिए बशर-अल-असद की सीरियाई सरकार के साथ संबंधों के एक नए युग के लिए तैयार है। इस बीच, सीरियाई विपक्ष, तुर्की के लिए महज एक दिखावा मात्र प्रतीत होता है। इस बात की संभावना नहीं है कि विपक्ष स्पष्ट और विशिष्ट प्रतिबद्धताओं और सीरिया में संभावित राजनीतिक और संवैधानिक परिवर्तन से संबंधित मुद्दों के लिए क्षेत्रीय राजनीतिक आवरण के बिना तुर्की और सीरिया के बीच समझौते को स्वीकार करेगा। लेकिन तुर्की अपने उच्च-स्तरीय हितों को सीरियाई विपक्ष जैसे महत्वहीन समूहों द्वारा शासित होने की अनुमति नहीं देगा। अंकारा प्रमुख सीरियाई विपक्षी सशस्त्र गुटों को नियंत्रित करने की कोशिश करेगा और संभवत: उन लोगों को खत्म कर देगा जिन पर उसे अपने नए एजेंडे का विरोध करने का संदेह है। इस समय विपक्षी समूहों के लिए सबसे उपयुक्त विकल्प उत्तरी सीरिया में कुर्दों के साथ मिलकर एक संयुक्त राजनीतिक और सैन्य कमान बनाना है। इससे अरब और कुर्द विपक्षी समूहों को सीरियाई क्षेत्र के लगभग 35-40 प्रतिशत और कुल आबादी के एक बड़े हिस्से पर नियंत्रण मिल जाएगा। पिछले युद्ध के वर्षों के दौरान अरबों और कुर्दों के बीच विकसित हुई दुश्मनी के बावजूद ऐसा गठबंधन बनाना पारस्परिक रूप से फायदेमंद होगा यदि विकल्प उनका राजनीतिक अंत है। संयुक्त राज्य अमेरिका संभवत: इस गठबंधन का समर्थन करने पर भी विचार करेगा, विशेष रूप से कुर्दों को एकजुट करने और उन्हें सीरियाई वार्ता समिति में शामिल करने के अतीत के प्रयासों के साथ-साथ कुर्द और विपक्ष-नियंत्रित के बीच व्यापार के पुनरुद्धार के लिए इसके आह्वान को देखते हुए।

बलरामपुर में मकान निर्माण के लिए बने गड्ढों में भर गया था पानी; खेलते-खेलते गिरे

नानी घर घूमने आए भाई-बहनों की डूबने से मौत

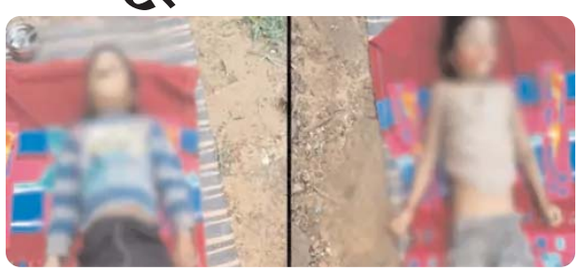

मीडिया ऑडिटर, बलरामपुर (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के बलरामपुर जिले में 2 मासूम भाई-बहनों की डूबने से मौत हो गई। दोनों अपनी मां के साथ नाना-नानी के घर घूमने आए हुए थे। शुक्रवार को दोनों बच्चे खेल रहे थे इसी दौरान घर के बाहर ही नींव के लिए खोदे गए गड्ढे में डूब गए।

मामला रघुनाथनगर थाना इलाके के केसारी गांव का है। मासूम बच्चों की पहचान 6 साल के कार्तिक जायसवाल और 5 साल की दीपा जायसवाल के रूप में हुई है। वे केसारी गांव से 15 किलोमीटर दूर बेतो गांव के रहने वाले थे। उनके पिता का नाम धीरेंद्र जायसवाल है।

12 गड्ढों में बारिश के कारण पानी भरा: बताया जा रहा हैं कि बच्चों के नाना-नानी घर के पास ही पक्के मकान का निर्माण करा रहे थे। कॉलम के लिए 6-6 फीट के 12 गड्ढ खोदे गए थे। इन गड्ढों में बारिश के कारण पानी भर गया था। मासूम भाई-बहन शुक्रवार सुबह घर से बाहर निकले थे। करीब 9 बजे दोनों गड्ढ के पास खेल रहे थे तभी कार्तिक और दीपा उसमें गिर गए।

नींव के लिए खोदे गए गड्ढे में मृत मिले बच्चे: परिजनों ने बताया कि कुछ देर तक बच्चों के खेलने की आवाज सुनाई दे रही थी अचानक से बच्चे गायब हो गए। कुछ देर के बाद परिजन पड़ोस में खोजबीन करने पहुंचे लेकिन वहां भी कोई पता नहीं चला। इसके बाद परिजन की नजर गड्ढ में पड़ी जहां भाई-बहन मृत मिले। परिजनों ने पुलिस को भी मामले की जानकारी दी।

जांच अधिकारी ललित एक्का ने बताया कि रघुनाथनगर पुलिस ने केस दर्ज कर लिया है। वहीं शवों को पोस्टमॉर्टम के बाद परिजनों को सौंप दिया गया हैं। पुलिस मामले की हर एंगल से जांच कर रही है।

कोरबा में भी 3 साल के बच्ची की मौत: वहीं कोरबा जिले में करंट लगने से 3 साल की बच्ची की मौत हो गई। गुरुवार (11 जुलाई) को घर के अंदर बच्ची खेल रही थी, तभी बिजली मीटर से निकली तार की चपेट में आ गई। हाथ में करंट लगने के बाद तार पेट में जा गिरा। जिससे हाथ-पेट जल गए। घटना राजगामार चौकी के केसला गांव की है। जानकारी के मुताबिक, मूल रूप से बिहार के सहरसा जिले की रहने वाले महेश दास अभी केसला गांव में किराए के मकान पर रह रहे हैं। रोजी मजदूरी का काम करते हैं। बताया जा रहा हैं कि, महेश काम पर गया था। उसकी प%ी घर पर काम कर रही थी। इस दौरान बेटी अंजली घर के अंदर खेल रही थी।

जन समस्या निवारण शिविर में रोपे फलदार एवं छायादार पौधे

मीडिया ऑडिटर, चिरमिरी (एजेंसी)। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान का शुभारंभ किया। श्री मोदी ने दिल्ली के बुद्ध जयंती पार्क में एक पीपल का पेड़ लगाया। उन्होंने सभी देशवासियों से हमारे ग्रह को बेहतर बनाने में योगदान देने का भी अनुरोध किया है और कहा कि पिछले दशक में भारत ने कई सामूहिक प्रयास किए हैं, जिनसे पूरे देश के वन क्षेत्र में वृद्धि हुई है। "आज विश्व पर्यावरण दिवस पर "मुझे एक पेड़ माँ के नाम" अभियान शुरू करने पर बहुत प्रसन्नता हो रही है। मैं देशवासियों के साथ ही दुनिया भर के लोगों से यह आग्रह करता हूं कि वे आने वाले दिनों में अपनी मां को श्रद्धांजलि अर्पित करने के रूप में एक पेड़ जरूर लगाएं और या एक पेड़ माँ के नाम उपयोग करते हुए अपनी एक तस्वीर साझा करने का आग्रह किया है। इसी कड़ी में विगत दिवस जिला मनेंद्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर के विकासखंड मनेंद्रगढ़ के ग्राम पंचायत भौता में 5 ग्राम पंचायतों नारायणपुर, छिपछिपी, बंजी, बुंदेली तथा पाराडोल को सम्मिलित कर जिला स्तरीय जन समस्या निवारण शिविर का आयोजिन किया गया। इस दौरान स्कूल ग्राउण्ड भौंता के जन समस्या निवारण शिविर में जनप्रतिनिधियों, जिला अधिकारी एवं कर्मचारियों के द्वारा एक पेड़ माँ के नाम पर फलदार एवं छायादार पौधों का रोपण कर पौधों की रक्षा का संकल्प भी लिया गया। सरपंच मुन्नीबाई ने आम का पौधा, कलेक्टर डी. राहुल वेंकट ने नीम का पौधा, अपरे कलेक्टर ने करंज का पौधा, एसडीएम लिंगराज सिदार ने जामुन का पौधा तथा जनपद सीईओ कुमारी वैशाली ने अमरूद का पौधा लगाया। इस दौरान जन समस्या निवारण शिविर में आये हुये ग्रामीणों को भी वन विभाग द्वारा विभिन्न प्रकार के फलदार एवं छायादार पौधों का निःशुल्क वितरण किया गया।

शादी का झांसा देकर युवक ने 4 साल तक किया युवती का रेप

मीडिया ऑडिटर, रायपुर (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के सरगुजा जिले में युवती को शादी का झांसा देकर युवक ने 4 साल तक रेप किया। युवक पर युवती ने शादी के लिए दबाव डाला तो उसने शादी करने से इनकार कर दिया। युवती की रिपोर्ट पर पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। मामला कोतवाली अंबिकापुर थाना क्षेत्र का है। जानकारी के अनुसार अंबिकापुर में आकर रह रही युवती ने कोतवाली थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई। उसकी जान पहचान जशपुर निवासी मकसूद अंसारी से 4 वर्ष पहले हुई थी। आरोपी उससे मोबाइल से बात करता था। अगस्त 2020 में युवती के कमरे में आकर शादी करने का झांसा देकर दुष्कर्म किया।

पीड़िता ने बताया कि अगस्त 2020 से लगातार 2024 तक दैहिक शोषण किया। युवक करीब 4 साल तक दुष्कर्म करने के बाद शादी से इनकार कर दिया। युवती ने 10 जुलाई को कोतवाली थाने पहुंचकर रिपोर्ट दर्ज कराई।

कोतवाली थाना प्रभारी कोतवाली मनीष सिंह परिहार ने बताया कि पुलिस ने आरोपी मकसूद अंसारी (24) निवासी आस्ता, जिला जशपुर को गिरफ्तार किया है। वह अंबिकापुर में गांधीनगर थाना क्षेत्र में रह रहा था। आरोपी ने पूछताछ में अपराध कबूल कर लिया है। आरोपी को न्यायालय में पेश किया गया, जहां से उसे जेल भेज दिया गया है।

छत्तीसगढ़ में दूसरी पत्नी से संबंध सुधारने पहली का मर्डर

छह साल बड़ी पत्नी को पटक-पटककर मार डाला, फिर बोला- बीमारी से मर गई

मीडिया ऑडिटर, रायपुर (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के बस्तर जिले में दूसरी पत्नी से रिश्ते अच्छे बनाने के लिए एक शख्स ने अपनी पहली पत्नी की हत्या कर दी है। बताया जा रहा है कि दोनों के बीच जमकर विवाद हुआ और आवेश में आकर पति ने पत्नी को पटक-पटक कर मार डाला। मामला जिले के दरभा थाना क्षेत्र का है।

मिली जानकारी के मुताबिक बाडनपाल नाकापारा के रहने वाले सोमारू कश्यप (35) की पहली शादी बीडे कवासी (41) के साथ हुई थी। बीडे सोमारू से उम्र में करीब 6 साल बड़ी थी। शुरुआती दिनों में इन दोनों के बीच रिश्ते अच्छे थे। इनकी एक बेटी भी है, जो 10वीं में पढ़ाई करती है। अब करीब 3 से 4 साल पहले सोमारू का उसी इलाके की रहने वाली एक लड़की के साथ दोस्ती हो गई थी।

दूसरी शादी के बाद से हुआ था विवाद शुरू: दोस्ती प्यार में बदली और सोमारू ने उसके साथ शादी कर ली। अपनी दूसरी पत्नी को घर ले आया, जिसके बाद से पहली पत्नी के साथ विवाद होता रहता था। दोनों पत्नियों के साथ वह एक ही घर में रहता था। 8 जुलाई की देर रात भी सोमारू और बीडे के बीच विवाद हुआ था।

जमीन पर पटक-पटककर मारा: बताया जा रहा है कि आवेश में आकर सोमारू ने बीडे के सीने में पहले मुक्का मारा, फिर उसको कई बार जमीन पर पटक। सिर पर चोट लगने से जान चली गई। महिला के मायके वालों को बीमारी से मौत होने की कहानी सुनाई। आरोपी के परिजन भी इस मामले को छिपा रहे थे। पुलिस ने शक के आधार पर सोमारू को हिरासत में लिया। उससे कड़ाई से पूछताछ की, जिसके बाद आरोपी ने हत्या की कहानी सुना कर

जिले में विधानसभा वार शिविर की कार्ययोजना तैयार

मीडिया ऑडिटर, चिरमिरी (एजेंसी)। कलेक्टर डी. राहुल वेंकट के निर्देशानुसार जिले में विधानसभा वार जन समस्या निवारण शिविर का आयोजन किया जाना है जिसके लिए जिलाधिकारी एवं कर्मचारियों की बैठक कार्ययोजना तैयार किया गया है। विगत दिवस 11 जुलाई 2024 को ग्राम पंचायत भौंता में 5 ग्राम पंचायतों नारायणपुर, छिपछिपी, बंजी, बुंदेली तथा पाराडोल को सम्मिलित जन समस्या निवारण शिविर का आयोजन किया गया था। इसी प्रकार आने वाले दिनों में 25 जुलाई 2024 दिन गुरूवार को ग्राम पंचायत अक्तवार में 5 ग्राम पंचायतों अक्तवार, भगवानपुर, च्यूल, खोहरा तथा कुदरा को सम्मिलित कर विकासखण्ड भरतपुर में जन समस्या निवारण शिविर का आयोजन किया जाना है। 08 अगस्त 2024 दिन गरूवार को 5 ग्राम पंचायतों अखराडांड, बरमपुर, भुकभुकी, मंझौली तथा सैंदा को शालिम कर विकासखण्ड खंडगवां के ग्राम पंचायत बरमपुर में जन समस्या निवारण शिविर का आयोजन किया जाना है। 22 अगस्त 2024 दिन गरूवार को 8 ग्राम पंचायतों चांटी, डोगरीटोला, घटई, जमथान, कंजिया, मलकडोल, पतवाही तथा मन्नौढ़ को शामिल कर विकासखण्ड भरतपुर के कंजिया में जन समस्या निवारण शिविर का आयोजन किया जाना है। 12 सितम्बर 2024 दिन गुरूवार को 5 ग्राम पंचायतों सोनहरी, बाला, घुटरा, बिहारपुर तथा बडगांवखुर्द को शामिल कर विकासखण्ड मनेंद्रगढ़ के ग्राम पंचायत गरूडोल में जन समस्या निवारण शिविर का आयोजन किया जाना है इसी प्रकार 27 सिंतम्बर 2024 दिन शुक्रवार को 5 ग्राम पंचायतों कमर्जी, मुर्किल, नौगई, नेउर तथा ठिसकोली को शामिल कर विकासखण्ड भरतपुर के ग्राम पंचायत कमर्जी में जन समस्या निवारण शिविर का आयोजन करने हेतु कार्ययोजना तैयार किया गया है। जिसमें जिला कलेक्टर श्री डी. राहुल वेंकट ने ग्रामीण जनों से अधिक से अधिक संख्या में शिविर में उपस्थित होकर शासकीय योजनाओं का लाभ लेने का आग्रह किया है।

छत्तीसगढ़ में बीजेपी नेता चढ़ेंगे गेड़ी

प्रदेश अध्यक्ष ने बताया 15 जुलाई से 29 सितंबर तक का पूरा शेड्यूल; निकाय चुनाव पर फोकस

मीडिया ऑडिटर, रायपुर (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ बीजेपी नेताओं को हरेली त्योहार को खास अंदाज और गांव-गांव में मनाने का टास्क दिया गया है। बीजेपी नेता गेड़ी चढ़ेंगे, नारियल फेंकने जैसे गेम्स कराएंगे। इतना ही नहीं, निकाय चुनाव से पहले 15 जुलाई से सितंबर महीने तक के कार्यक्रम भी तय किए गए हैं।

इस टाइम टेबल में बैठकों के अलावा तीज पर्व, गुरु पूर्णिमा जैसे त्योहारों पर होने वाले आयोजन भी शामिल हैं। इससे पहले कांग्रेस राज में हरेली का त्योहार मुख्यमंत्री निवास में मनाया जाता था तब भूपेश बघेल गेड़ी चढ़ते थे। तब भारतीय जनता पार्टी के नेता इसे दिखावा बताते थे।

कहा गया है कि जिस दिन हरेली तिहार होगा तब गांव में कार्यक्रम करवाएं। गेड़ी चढ़ने के अलावा गांव में नारियल फेंकने के गेम्स करवाए जाएंगे। यह कार्यक्रम मंडल और बूथ स्तर पर होंगे। रायपुर के भाजपा कार्यालय एकात्मक परिसर में किरणदेव ने कहा कि, कार्यकर्ता पंचायत से पार्लियामेंट तक भाजपा का परचम लहराने के लिए संकल्पित हैं। किरणदेव ने जो कार्ययोजना बताई उससे साफ है कि स्थानीय तीज-त्योहार को लेकर भाजपा लोगों को साथ जोड़ेगी। हरेली पर गांव-गांव में आयोजन से भाजपा माहौल तैयार करेगी। वहीं शिक्षक दिवस पर शिक्षकों को सम्मानित कर बड़े वर्ग में भाजपा अपनी पकड़ बनाएगी।

निगम-मंडलों और मंत्रिमंडल के सवालों पर किरण देव ने कहा कि, निगम-मंडलों में नियुक्तियों का विषय मुख्यमंत्री का है। निश्चित रूप से मुख्यमंत्री साय इस पर विचार कर रहे हैं। मंत्रिमंडल विस्तार और खुद के मंत्री बनने के सवाल पर किरण देव ने कहा कि, बीजेपी में स्पष्ट प्रक्रिया है कि किस कार्यकर्ता को कौन-सी जवाबदारी देना है? कौन सरकार का और कौन संगठन का अंग बनेगा, इसका निर्णय करने के लिए राष्ट्रीय नेतृत्व है।

नगरीय निकाय चुनाव प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष कराने पर कहा कि, जो जनता के हित में हो, जो सर्व सुविधाजनक हो, परिणामदायक हो वही होगा। पहले चुनाव प्रत्यक्ष रूप से होता था। महापौर और अध्यक्ष का चुनाव जनता करती थी। बीच में 5 साल कांग्रेस ने इसे बदल दिया। इसमें पार्षदों के माध्यम से महापौर और अध्यक्ष चुने जाने लगे। दोनों के अलग-अलग परिणाम होते हैं। अब मुख्यमंत्री साय अपने मंत्रिमंडलीय सहयोगियों के साथ बैठकर इस पर फैसला लेंगे।

बिलासपुर के शनिचरी में चला निगम का बुलडोजर

50 दुकानों के शेड, बेजा कब्जा हटाए गए, निगम की जमीन पर बनी दो दुकानें सील

मीडिया ऑडिटर, रायपुर (एजेंसी)। बिलासपुर के प्रमुख शनिचरी सब्जी मंडी रोड पर रोज लगने वाले जाम से आमजन को राहत दिलाने नगर निगम ने कार्रवाई की। दुकान के बाहर सामान रखने, बेजा कब्जा कर शेड और निकाले गए चबूतरे आदि को मिलाकर करीब 50 दुकानों पर बुलडोजर चलाया गया। वहीं शनिचरी रपटा पर नगर निगम की जमीन पर बिना अनुमति जबरदस्ती बनाई गई दो दुकानों को सील कर दिया गया।

शनिचरी रपटा पर निगम की जमीन पर पक्की दुकानों का निर्माण करने के मामले में भवन और बाजार विभाग के अफसरों की भूमिका संदिग्ध बताई गई है। आरोप है कि अफसरों की शह पर कथित अवैध निर्माण किया गया और मामले को दबा दिया गया था। नगर निगम कमिश्नर अमित कुमार को इसकी भनक लग गई, तो उन्होंने कार्रवाई के निर्देश दे दिए।

निगम की जमीन पर ड्रिलिंग मशीन की अवैध दुकान खोली: जोन कमिश्नर ने बताया कि निगम की जमीन पर ड्रिलिंग मशीन की दुकान खोलने वाले श्यामलाल, अशोक गुप्ता और महेंद्र सिंह ग्वाला के स्टोरेज को वैधानिक दस्तावेज नहीं होने पर सील कर दिया गया है।

दो दुकानदारों को दी गई थी नोटिस: जोन कमिश्नर के मुताबिक निगम की जमीन पर अवैध निर्माण के मामले में दोनों दुकानदारों को नोटिस दी गई थी। दुकानदारों ने कोई दस्तावेज पेश नहीं किए और न ही संतोषजनक जवाब दे पाए, इसलिए उनके खिलाफ दुकान सील करने की कार्रवाई की गई। उन्होंने बताया कि रोड के दोनों ओर फल और अन्य वस्तुओं के ठेले शनिचरी रोड पर नहीं लगने दिए जाएंगे। आज भी सभी ठेले वालों को वहां से हटा दिया गया।

होटल के दिव्यांग कर्मचारी की पिटाई में 3 पुलिसकर्मी सस्पेंड

बिलासपुर एसपी ने की कार्रवाई, बाहर नहीं निकलने पर की थी पिटाई

मीडिया ऑडिटर, बिलासपुर (एजेंसी)। बिलासपुर में होटल के दिव्यांगकर्मी की पिटाई के मामले में लेडी कांस्टेबल सहित 3 पुलिसकर्मियों को एसपी रजनेश सिंह ने सस्पेंड कर दिया है। बता दें कि जानकारी मिलने पर गांव के लोगों ने तीनों पुलिस कर्मियों को घेरकर बंधक बना लिया था। इस पर थाना प्रभारी ग्रामीणों को समझा बुझा कर बंधक पुलिस कर्मियों को छुड़ा कर ले गए थे। दरअसल, पूरा मामला 9 जुलाई को बेलगहना थाना क्षेत्र के खोंगसरा आमागोहन का है। बेलगहना थाना के आरक्षक दामोदर सिंह, नव आरक्षक हेमंत चन्द्राकर और लेडी कांस्टेबल कोमल तिवारी सटोरिया को पकड़ने के लिए खोंगसरा आमागोहन स्थित बादल नामक युवक के होटल में पहुंचे थे। जहां तीनों रौब दिखाते हुए होटल के कर्मचारियों को बलपूर्वक बाहर निकालने लगे।

दिव्यांग कर्मचारी के बाहर नहीं आने पर की थी पिटाई: वहीं दिव्यांग कर्मचारी शमसुद्दीन के बाहर नहीं आने पर उन्होंने उसे बाहर निकालकर उसकी बेदम पिटाई कर दी। शमसुद्दीन ने बताया कि वह पुलिस कर्मियों का आदेश सुन नहीं पाया था और इसीलिए वह बाहर नहीं निकल पाया। यह बात तीनों पुलिस कर्मियों को नागवार गुजरी और उन्होंने शमसुद्दीन को घसीटते हुए बाहर निकाल कर पीटा।

कुछ घंटो में छुड़ा ले गए थे थाना प्रभारी: शमसुद्दीन के साथ ज्यादती की जानकारी जब गांव वालों को लगी तो वे आक्रोशित हो उठे और तीनों पुलिस कर्मियों को घेरकर बंधक बना लिया। घटना के कुछ घंटे बाद ही थाना प्रभारी गांव वालों को समझा बुझा कर तीनों पुलिस कर्मियों को छुड़ा कर ले गए।

एसपी ने मामले को गंभीरता से लिया: इस बीच कुछ लोगों ने इसकी सूचना एसपी रजनेश सिंह को दे दी। इधर पुलिस अधीक्षक रजनेश सिंह ने शिकायत को गंभीरता से लेते हुए आरक्षक दामोदर सिंह, नव आरक्षक हेमंत चंद्राकर, महिला आरक्षक कोमल तिवारी को तत्काल सस्पेंड करने के निर्देश दिए। एडिशनल एसपी अर्चना झा ने बताया कि पूरे मामले की जांच एसडीओपी मुकुल उपाध्याय कर रही हैं।

छात्रा की पानी बोतल मिला था एसिड जैसा तरल पदार्थ जांजगीर-चांपा के केंद्रीय विद्यालय का मामला

अज्ञात व्यक्ति के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज

मीडिया ऑडिटर, रायपुर (एजेंसी)। जांजगीर-चांपा जिले के केंद्रीय विद्यालय में सोमवार को 11वीं की छात्रा के बोतल में एसिड जैसी तरल पदार्थ मिलना और एक अंग्रेजी में लिखा लेटर मिलने को लेकर प्राचार्य कुशल चंद्रा ने अज्ञात व्यक्ति के खिलाफ सिटी कोतवाली थाने में शिकायत की गई। इस मामले में बीएनएस की धारा 118 के तहत परिवारद्धर दर्ज किया गया है। सिटी कोतवाली थाना पुलिस इस मामले की जांच में जुटी हुई है।

दरअसल, यह घटना सोमवार 8 जुलाई की है। केंद्रीय विद्यालय में पढ़ने वाली 11वीं की एक छात्रा अपने सहेलियों के साथ खेल मैदान से वापस आई थी। इसके बाद अपने बैग में रखे पानी की बोतल से पानी पिया, तो गले में एसिड जैसे जलन होने लगा। इसके बाद लड़की ने मुंह से पानी निकल दी और चिल्लाने लगी। बोतल की पानी को जमीन में गिराने पर उसमें से झाग निकलने लगा।

पहले भी पानी बोतल में मिलाया था वॉशिंग पाउडर: इतना ही नहीं वहीं पर अंग्रेजी में लिखा हुआ एक लेटर मिला है जिसमें लिखा था कि 'स्कूल स्टाफ कितना भी प्रयास कर ले मुझ तक नहीं पहुंच सकते'। इस मामले में छात्रा के पिता ने कहा कि कुछ दिन पहले भी पानी के बोतल में किसी ने वॉशिंग पाउडर डाल दिया था। घर आने के बाद परिजनों को छात्रा ने जानकारी दी थी। तब घटना के संबंध में गंभीरता से नहीं लिया गया।

सीसीटीवी खराब, हैंड राइटिंग मिलाने बच्चों की कॉपी कराई जमा: प्राचार्य कुशल चंद्रा से बात करने पर उन्होंने कहा कि सीसीटीवी कैमरे लगे हैं मगर चल नहीं रहे है। इसके कारण से किसने यह घटना किया है बता पाना मुश्किल है। गुमनाम लेटर को लेकर पूछने पर कहा कि 11वीं के जितने भी छात्र-छात्राएं हैं सभी की अंग्रेजी की कॉपी जमा की गई है। उस लेटर की हैंड राइटिंग भी मिलाई जा रही है।

फॉरेंसिक टीम करेगी जांच: सिटी कोतवाली पुलिस जांचकर्ता एएसआई आरपी बघेल ने मामले की गंभीरता को लेकर बोतल को जब्त कर लिया। बोतल को फॉरेंसिक टीम एक्सपर्ट के पास जांच के लिए भेजा जा रहा है। रिपोर्ट आने के बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी।

नेपाल में 59 यात्रियों को ला रहा विमान गौतमबुद्ध एयरपोर्ट के 'रनवे पर फिसला

काठमांडू (एजेंसी)। नेपाल की निजी विमानन कंपनी 'बुद्ध एयर का एक विमान बृहस्पतिवार की रात लुम्बिनी प्रांत में उतरते समय 'रनवे पर फिसल गया। एक मीडिया खबर के अनुसार वाहन में 59 लोग सवार थे। घटना में किसी भी यात्री के घायल होने की कोई खबर नहीं है। 'काठमांडू पोस्ट समाचार पत्र ने रूपान्देही जिला पुलिस प्रवक्ता मनोहर प्रसाद भट्टा के हवाले से बताया कि 'बुद्ध एयर विमान संख्या 805 बृहस्पतिवार रात लुम्बिनी प्रांत के सिद्धार्थनगर स्थित गौतमबुद्ध हवाई अड्डे पर उतरते समय कीचड़ में फंस गया, जिसके बाद वह 'रनवे से फिसल गया। उन्होंने बताया कि चालक दल के चार सदस्यों समेत विमान में सवार सभी 59 यात्रियों को सुरक्षित बाहर निकाल लिया गया।

राउज एवेन्यू कोर्ट से केजरीवाल को लगा झटका, सीबीआई केस में 25 जुलाई तक बढ़ाई न्यायिक हिरासत

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली की राउज एवेन्यू कोर्ट से दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल का बड़ा झटका लगा है। कोर्ट ने कथित आबकारी नीति घोटाले से जुड़े भ्रष्टाचार के मामले में केजरीवाल की न्यायिक हिरासत शुक्रवार को 25 जुलाई तक बढ़ा दी। इस मामले की जांच केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) कर रहा है। केजरीवाल को वीडियो कॉन्फ्रेंस के जरिए विशेष न्यायाधीश कावेरी बावेजा के समक्ष पेश किया गया। वह अपनी न्यायिक हिरासत की अवधि समाप्त होने पर सीबीआई और प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) के मामलों के संबंध में पेश हुए। इससे पहले दिन में उच्चतम न्यायालय ने कथित घोटाले से जुड़े धनशोधन मामले में उन्हें अंतरिम जमानत दे दी थी। ईडी ने मई में मामले में अपना सातवां पूरक आरोपपत्र दाखिल किया था, जिसमें केजरीवाल और उनकी आम आदमी पार्टी (आप) को आरोपी बनाया गया था। अदालत ने पूरक आरोपपत्र पर संज्ञान लेने के बाद मंगलवार को केजरीवाल और 'आप% के लिए पेशी वारंट जारी किया था। 'आप% के राष्ट्रीय सचिव पंकज गुप्ता ने अदालत में पार्टी का प्रतिनिधित्व किया।

नेपाल में भूस्खलन की चपेट में आई दो बसें नदी में बहीं, 7 भारतीयों समेत 60 से अधिक यात्री लापता

काठमांडू (एजेंसी)। नेपाल में शुक्रवार तड़के भूस्खलन की चपेट में आई 2 बसों के उफनाई नदी में बहने से उनमें सवार 60 से अधिक यात्रियों के लापता होने की खबर है। लापता यात्रियों में सात भारतीय नागरिक भी शामिल बताए जा रहे हैं। सूत्रों से मिली जानकारी के मुताबिक, 65 यात्रियों को ले जा रही दो बसें चितवन जिले के सिमलताल इलाके में नारायणघाट–मुगलिंग मार्ग पर भूस्खलन की चपेट में आने के बाद उफनाई त्रिशूली नदी में बह गईं। इस बीच, एक अन्य घटना में कास्की जिले में गुरुवार को लगातार बारिश के कारण हुए भूस्खलन और बाढ़ में कम से कम 11 लोगों की मौत होने की सूचना है। चितवन के मुख्य जिला अधिकारी इंद्र देव यादव ने इस हादसे की पुष्टि की। यादव ने बताया कि बीरगंज से काठमांडू जा रही एंजेल बस और राजधानी से गौर के लिए रवाना हुई गणपति डीलक्स तड़के साढ़े तीन बजे भूस्खलन की चपेट में आ गई। पुलिस के अनुसार, एंजेल बस में 24 जबकि गणपति डिलक्स में 41 यात्री सवार थे। 'द काठमांडू पोस्ट% की खबर के मुताबिक, गणपति डीलक्स में सवार तीन यात्री बस से कूद गए, जिससे वे मलबे के साथ बहने से बच गए। पुलिस ने बताया कि बीरगंज से काठमांडू जा रही एंजेल बस में सवार 21 यात्रियों का विवरण मिल गया है और इनमें सात भारतीयों के शामिल होने की बात सामने आई है।

कास्ट पॉलिटिक्स पर भड़के नितिन गडकरी, कहा- जो करेगा जाति की बात, उसको मारूंगा कसकर लात

महाराष्ट्र (एजेंसी)। केंद्रीय सड़क एवं परिवहन मंत्री नितिन गडकरी ने महाराष्ट्र में एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए बोला कि वर्तमान समय में महाराष्ट्र में जातिवाद की राजनीति चल रही है। यह कहते हुए केंद्रीय मंत्री जातिवाद की राजनीति को लेकर भड़क गए। गडकरी ने आगे कहा कि अभी महाराष्ट्र में जातिवाद की राजनीति चल रही है। मैं जात–पात को नहीं मानता। उन्होंने कहा मेरे पास जो करेगा जात की बात, उसको मारुंगा कसकर लात। मंत्री ने आगे कहा कि मेरे निर्वाचन क्षेत्र में 40 प्रतिशत मुसलमान हैं। मैंने उनसे पहले ही कहा है, मैं आरएसएस वाला हूं। मैं हाफ चड्डी वाला हूं। मैंने यह भी साफ कह दिया है, किसी को वोट देने से पहले एक बार अच्छे से सोच ले, ताकि बाद में पछताना ना पड़े। जो वोट देगा मैं उसका काम करुंगा ही और जो नहीं भी देगा मैं उसका भी काम करुंगा। आपको बता दें कि इस साल महाराष्ट्र में विधानसभा का चुनाव होना है। इस विधानसभा का कार्यकाल 26 नवंबर को समाप्त हो जाएगा। अक्टूबर–नवंबर में यहां की 288 विधानसभा सीटों के लिए चुनाव होंगे।

ईडी मामले में केजरीवाल को अंतरिम जमानत

नयी दिल्ली(एजेंसी)। उच्चतम न्यायालय ने मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को दिल्ली आबकारी नीति कथित घोटाला से जुड़े धनशोधन के मामले में प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की ओर से दर्ज मुकदमे में शुक्रवार को अंतरिम जमानत दे दी, लेकिन वह केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) की ओर से दर्ज मुकदमे के कारण तत्काल जेल से रिहा नहीं हो पाएंगे। दोनों मामले में वह न्यायिक हिरासत में तिहाड़ जेल में बंद हैं। न्यायमूर्ति संजीव खन्ना और न्यायमूर्ति दीपांकर दत्ता की पीठ ने मुख्यमंत्री केजरीवाल को अंतरिम राहत संबंधी आदेश पारित किया। पीठ ने उन्हें राहत देते हुए कहा कि याचिकाकर्ता (केजरीवाल) की ओर से ईडी द्वारा अपनी गिरफ्तारी को चुनौती देने वाली याचिका में उठाए गए कुछ कानूनी पहलुओं पर शीर्ष अदालत की बड़ी पीठ द्वारा विचार किए जाने की आवश्यकता है। इसलिए उनकी अंतरिम जमानत याचिका तब तक स्वीकार की जाती है। दिल्ली के मुख्यमंत्री केजरीवाल आबकारी नीति 2021–2022 (जिसे विवाद के बाद रद्द कर दी गई थी) के मामले में पहले ईडी और फिर सीबीआई द्वारा अलग–अलग दर्ज मुकदमों में न्यायिक हिरासत में जेल में बंद शीर्ष अदालत की पीठ ने आज केजरीवाल को राहत देते हुए कहा कि जीवन के अधिकार से जुड़े सवाल के कारण यह मामला शीर्ष अदालत की बड़ी पीठ को संदर्भित किया गया है, इसलिए हम अरविंद केजरीवाल को अंतरिम जमानत पर रिहा करने का निर्देश देते हैं।

बिरला ने तजाकिस्तान के सांसदों, अधिकारियों को भारत में प्रशिक्षण देने का दिया प्रस्ताव

सेंट पीटर्सबर्ग (एजेंसी)। रूस के सेंट पीटर्सबर्ग में आयोजित 10वें ब्रिक्स संसदीय मंच की बैठक में भाग लेने आए लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने शुक्रवार को ताजिकिस्तान की संसद के अध्यक्ष ज़ोकिर–ज़ोदा महमद–तोहिर ज़ोहिर से मुलाकात की और तजाकिस्तान के सांसदों तथा अधिकारियों को भारत में प्रशिक्षण का प्रस्ताव दिया। इस दौरान श्री ज़ोहिर ने श्री बिरला को पुनः लोकसभा अध्यक्ष निर्वाचित होने पर शुभकामनाएं दीं। इस दौरान दोनों नेताओं ने दोनों देशों की संसदों के बीच सहयोग बढ़ाने पर विस्तार से चर्चा की। बातचीत के दौरान श्री बिरला ने तजाकिस्तान में पढ़ रहे भारतीय विद्यार्थियों का ख्याल रखने का आग्रह किया और दोनों देशों के बीच व्यापार की प्रगति को महत्वपूर्ण बताया। इस दौरान तजाकिस्तानी संसद के अध्यक्ष ने तजाकिस्तान में भारतीय संगीत के लोकप्रिय होने की जानकारी की।

गौरतलब है कि दोनों देशों के मध्य मजबूत एतिहासिक, सांस्कृतिक और भाषाई संबंध है।

नेपाल में प्रचंड की सरकार गिरी, फ्लोर टेस्ट हारने के बाद पीएम पद से इस्तीफा दिया

चीन समर्थक ओली बन सकते हैं प्रधानमंत्री

काठमांडू (एजेंसी)। नेपाल में प्रधानमंत्री पुष्प कमल दहल उर्फ प्रचंड ने शुक्रवार को अपने पद से इस्तीफा दे दिया है। काठमांडू पोस्ट के मुताबिक, वह संसद में विश्वासमत हासिल करने में नाकाम रहे। वे सिर्फ 1 साल 6 महीने ही प्रधानमंत्री रह पाए।

फ्लोर टेस्ट में उन्हें 275 में से सिर्फ 63 सांसदों का साथ मिला। नेपाल की नेशनल असेंबली के 194 सांसदों ने उनके खिलाफ वोट किया। उन्हें सरकार बचाने के लिए 138 सांसदों के समर्थन की जरूरत थी।

दरअसल, इस महीने की शुरुआत में चीन समर्थक केपी शर्मा ओली की पार्टी ष्टक्क्ष–रूरू ने प्रधानमंत्री प्रचंड की कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ नेपाल से गठबंधन तोड़ लिया था। इसके बाद उनकी सरकार अल्पमत में आ गई थी। नेपाल के संविधान के आर्टिकल 100 (2) के तहत उन्हें एक महीने में बहुमत साबित करना था। वे आज इसमें फेल हो गए।

नेपाल में आगे क्या होगा? संसद में स्पीकर देवराज घिमरे ने जैसे ही प्रचंड के विश्वास मत में असफल होने की घोषणा की, वहां मौजूद सांसद केपी ओली को बधाई देने लगे। ओली और देउबा जल्द ही मिलकर सरकार बनाने के लिए राष्ट्रपति राम चंद्र पौडेल के पास जाएंगे।

दोनों दलों के पास संसद में कुल 167 सासंदों का समर्थन हासिल है। नेपाली संविधान के मुताबिक नई सरकार को अपने गठन के 30 दिनों के भीतर संसद में विश्वास मत जीतना होता है।

चीन समर्थक ओली ने भारत समर्थक देउबा का दामन थामा: ओली की पार्टी ष्टक्क्ष–रूरूने देश की सबसे बड़ी पार्टी शेर बहादुर देउबा की नेपाली कांग्रेस से गठबंधन करने का फैसला किया है। बता दें कि शेर बहादुर देउबा को भारत समर्थक माना जाता है, वहीं ओली चीन के करीबी माने जाते हैं। देउबा और ओली के बीच में प्रधानमंत्री पद को लेकर बातचीत हुई है।

काठमांडू पोस्ट ने सूत्रों के हवाले से बताया है कि नई सरकार में डेढ़ साल तक केपी शर्मा ओली पीएम बनेंगे। इसके बाद बचे हुए कार्यकाल तक देउबा प्रधानमंत्री बनेंगे। केपी ओली 4 साल बाद क्करू पद पर वापसी करेंगे। इससे पहले वे 2018 से 2021 तक प्रधानमंत्री रहे थे।

ओली और प्रचंड के बीच के रिश्तों की क्या कहानी है? 2015 में नेपाल में नया संविधान लागू हुआ। चुनाव हुए और केपी शर्मा ओली नेपाल के प्रधानमंत्री बने। लेकिन, जुलाई 2016 में सहयोगियों के समर्थन वापस लेने से उनकी सरकार गिर गई। सरकार गिरी तो ओली ने इसमें भारत का हाथ बताया, क्योंकि भारत ने नेपाल के नए संविधान में मधेषी और थारू लोगों की मांगों को शामिल नहीं करने पर विरोध दर्ज कराया था। दोबारा चुनाव हुए तो ओली की पार्टी कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ नेपाल (यूएमएल) और पुष्प कमल दहल प्रचंड की पार्टी कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ नेपाल (माओवादी) ने गठबंधन सरकार बनाई। दोनों को मिलाकर सदन में दो तिहाई बहुमत मिला। 2018 में दोनों पार्टियों का विलय हो गया और नेपाल कम्युनिस्ट पार्टी (एनसीपी) अस्तित्व में आई। 275 सदस्यों की सदन में एनसीपी के 173 सांसद हैं। 31 महीने बाद एक बार फिर इस पार्टी के दो धड़े हो गए हैं। प्रचंड सक्रिय राजनीति में आने से पहले 1996 से 2006 तक नेपाल में सशस्त्र माओवादी आंदोलन का हिस्सा रहे हैं। वहीं, ओली हिंसात्मक आंदोलन के धुर विरोधी नेताओं में से एक रहे हैं।

हेमंत सोरेन ने पीजीटी शिक्षकों को सौंपा नियुक्ति पत्र

रांची (एजेंसी)। आज यानी 12 जुलाई को सीएम हेमंत सोरेन ने पीजीटी शिक्षकों को नियुक्त पत्र सौंपा। नियुक्ति पत्र वितरण का कार्यक्रम रांची के धुर्वा स्थित प्रभात तारा मैदान में हुआ। नियुक्ति पत्र वितरण समारोह में सीएम हेमंत सोरेन ने पीजीटी (स्नातकोत्तर प्रशिक्षित शिक्षक) शिक्षकों को नियुक्ति पत्र का तोहफा दिया। इस दौरान सीएम हेमंत ने कहा, आप लोग काफी उम्मीदों के साथ लंबे समय से इस दिन का इंतजार कर रहे थे। आखिरकार यह महत्वपूर्ण दिन आपके लिए और सरकार के लिए आ गया। यह दिन इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि आज शिक्षकों की नियुक्ति हुई है। वैसे तो हमने हजारों नियुक्ति दी है। 20 हजार से ज्यादा नियुक्ति हमने पहले ही दे दिया था। अलग–अलग आयोजनों के माध्यम से संगठित असंगठित क्षेत्रों में 60 हजार नियुक्ति दिया। हमने कई ऐसे नौजवानों को नियुक्ति पत्र दिया है जो आज विदेशों में अपना कर रहे हैं। सीएम ने आगे कहा कि 2019 में हमारी सरकार बनी और कोरोना काल आ गया। फिर भी हम लोगों ने हार नहीं मानी। रात दिन हम लोग सजग रहे। उस वक्त भी झारखंड में हमने अफरा– तफरी नहीं होने दिया। हमारे इस राज्य ने पूरे देश को ऑक्सीजन दिया। सीएम ने विपक्ष पर हमला बोलते हुए कहा, 2 साल के बाद जीवन सामान्य हुआ तो हमारे विरोधियों ने अपनी हरकतें शुरू कर दी। अलग–अलग माध्यमों से मुझे आए दिन काम करने से रोकने का प्रयास हुआ, लेकिन हम रुके नहीं क्योंकि मुझे अपने लक्ष्य तक पहुंचना था

हार-जीत चलती रहती है, स्मृति ईरानी के खिलाफ न करें अपमानजनक भाषा का इस्तेमाल राहुल गांधी की अपील

नई दिल्ली (एजेंसी)। लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने शुक्रवार को लोगों से पूर्व केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी या किसी अन्य नेता के प्रति अपमानजनक भाषा का इस्तेमाल करने और अभद्र भाषा का प्रयोग करने से बचने का आग्रह किया। उनकी यह टिप्पणी ऐसे समय में आई है जब कुछ लोग ईरानी पर कटाक्ष कर रहे हैं क्योंकि उन्होंने उत्तर प्रदेश के अमेठी में कांग्रेस के किशोरी लाल शर्मा से लोकसभा चुनाव में हार के बाद अपना सरकारी बंगला खाली कर दिया है। राहुल गांधी ने एक्स पर कहा, जीवन में हार–जीत चलती रहती है। मैं सभी से आग्रह करता हूं कि वे श्रीमती स्मृति ईरानी या किसी अन्य नेता के प्रति अपमानजनक भाषा का प्रयोग करने और बुरा व्यवहार करने से बचें। पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा, लोगों को अपमानित करना कमजोरी की निशानी है, ताकत की नहीं। ईरानी ने लुटियंस दिल्ली में 28 तुगलक क्रिसेंट स्थित अपना सरकारी बंगला खाली कर दिया था। कुछ सप्ताह पहले ही वह गांधी परिवार के करीबी शर्मा से अमेठी संसदीय सीट पर 1.6 लाख से अधिक मतों के अंतर से हार गई थीं। पूर्व महिला एवं बाल विकास मंत्री को 2019 में उस समय दिग्गज नेता कहा गया था, जब उन्होंने इस सीट से राहुल गांधी को हराया था।

कांग्रेस बोली- पीएम के लिए लोकतंत्र का मतलब केवल डेमो-कुर्सी

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस ने शुक्रवार को आरोप लगाया कि आपातकाल को 'संविधान हत्या दिवस के रूप में मनाने का केंद्र सरकार का कदम सुर्खियां बटोरने की कवायद भर है, जबकि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 2014 से 2024 के दौरान देश में ''अघोषित आपातकाल लगाया हुआ था। पार्टी महासचिव जयराम रमेश ने यह भी कहा कि चार जून, 2024 का दिन इतिहास में 'मोदीमुक्ति दिवस% के रूप में दर्ज होगा। केंद्र सरकार ने 25 जून को 'संविधान हत्या दिवस% के रूप में मनाने का निर्णय लिया है, जिस दिन 1975 में आपातकाल की घोषणा की गई थी। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि 'संविधान हत्या दिवस 25 जून को मनाया जाना हमें याद दिलाएगा कि जब संविधान को रौंदा गया था, तो क्या हुआ था।

प्रधानमंत्री मोदी ने नोबेल पुरस्कार विजेता और चार ऑस्ट्रियाई इंडोलॉजिस्ट से वियना में मुलाकात के बाद की खुशी व्यक्त

वियना (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बुधवार को क्वांटम यांत्रिकी के प्रसिद्ध विशेषज्ञ नोबेल पुरस्कार विजेता एंटोन ज़िलिंगर और वियना में चार ऑस्ट्रियाई इंडोलॉजिस्टों से मुलाकात के बाद अपनी खुशी व्यक्त की, जिन्होंने भारतीय इतिहास और संस्कृति का अध्ययन करने के लिए अपना काम समर्पित किया है। पीएम ने एक्स पर एक पोस्ट साझा की और कहा कि नोबेल पुरस्कार विजेता के साथ उनकी एक शानदार बैठक हुई, उन्होंने कहा कि उन्होंने इस क्षेत्र में उनके काम को स्वीकार किया, जो शोधकर्ताओं और नवप्रवर्तकों की भावी पीढ़ियों को प्रेरित करेगा।

शुभेंदु अधिकारी ने की अमित शाह से मुलाकात

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल विधानसभा में विपक्ष के नेता शुभेंदु अधिकारी ने केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह से मुलाकात की और उन्हें राज्य भर में 'भीड़ हिंसा' सहित ताजा राजनीतिक घटनाक्रमों से अवगत कराया है। श्री अधिकारी ने कहा कि उन्होंने गुरुवार को नयी दिल्ली में श्री शाह से उनके आवास पर मुलाकात की और राज्य को हिलाकर रख देने वाली 'भीड़ हिंसा' और उत्तरी दिनाजपुर के चोपड़ा में तृणमूल कांग्रेस के नेताओं तजीमुल उर्फ जेसीबी और उत्तर 24 परगना में कमरहाटी–अरियादाहा में जयंत सिंह द्वारा महिलाओं पर किए गए अत्याचारों के बारे में बताया।

राज्य के नंदीग्राम के भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) विधायक ने सोशल मीडिया एक्स पर कहा, श्री अमित शाह ने चुनाव के बाद की हिंसा के पीड़ितों के बारे में पूछताछ की और हिंसा को कम करने के संबंध में पूरा समर्थन दिया। श्री अधिकारी ने कहा मैंने उन्हें एक यूएसबी ड्राइव सौंपी जिसमें चोपड़ा में एक महिला की सरेआम पिटाई, कूच बिहार में भाजपा अल्पसंख्यक मोर्चा की एक महिला

कार्यकर्ता को निर्वस्त्र करने, मुर्शिदाबाद में तृणमूल कांग्रेस के दो गुटों और तृणमूल कांग्रेस पंचायत सदस्यों के बीच बंकरा गैंगवार में देशी बम के साथ घूमना और अरियादाहा घटना के वीडियो फुटेज हैं। भाजपा नेता ने केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण से भी मुलाकात की और उनका ध्यान पश्चिम बंगाल सरकार द्वारा विकासात्मक और कल्याण निधि के जानबूझकर दुरुपयोग और दुरुपयोग की कथित संभावना की ओर आकर्षित करने के लिए कहा।

जापान और मलेशिया को 40 टन आम निर्यात करेगा उत्तर प्रदेश:योगी

लखनऊ (एजेंसी)। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि उत्तर प्रदेश इस साल जापान और मलेशिया को 40 टन आम निर्यात करेगा। उन्होने कहा कि 160 वर्ष के इतिहास में यह पहली बार हुआ है कि लखनऊ का दशहरी अमेरिका को निर्यात किया जा रहा है। भारत में दशहरी का दाम 60 से 100 रुपए के बीच है लेकिन यही दशहरी जब अमेरिका के मार्केट में पहुंचा तो इसका दाम 900 रुपए किलो हो गया है। यानी अगर हम ड्यूटी टैक्स, कार्गो और एयर फेयर का दाम भी जोड़ लें तो एक किलो आम अमेरिका भेजने की लागत 250–300 रुपए तक आ रही होगी तब भी एक किसान एवं बागवान को एक किलो आम पर 600 रुपए की बचत होगी। योगी ने शुक्रवार को अवध शिल्प ग्राम में उत्तर प्रदेश आम महोत्सव–2024 का शुभारंभ किया। इस दौरान उन्होंने कहा कि पिछले 7–8 वर्षों से उत्तर प्रदेश सरकार आम महोत्सव आयोजित कर रही है।

इस आयोजन में सरकार अपने प्रगतिशील किसानों और बागवानों को सम्मानित करती है। उत्तर प्रदेश के उत्पादित आम को हम न केवल देश में बल्कि दुनिया की मार्केट में पहुंच सके इसके लिए प्रयास कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि आप सभी जानते हैं कि हमारी सामान्य भाषा में जिस फल का नाम आम होता है उस फल में प्रत्येक नागरिक की पहुंच का सहज अनुमान लगाया जा सकता है, वह आम है इसलिए सबके लिए सुलभ भी है और सबके लिए सरल भी है और सबके लिए उपयोगी भी है। अत: जो आम होगा, वही राजा भी होगा और इसीलिए फलों के राजा के रूप में आम को हम सबने महत्व दिया है। उन्होने कहा कि उत्तर प्रदेश के बागवान केवल 3˜15 लाख हेक्टेयर क्षेत्रफल में 58 लाख मीट्रिक टन आम का उत्पादन करते हैं। देश के कुल आम उत्पादन का 25 से 30 प्रतिशत आम उत्पादन अकेले उत्तर प्रदेश में होता है। पिछले वर्ष उद्यान विभाग की टीम मास्को गई थी। इसमें लखनऊ और अमरोहा के किसान गए थे। वहां पर टीम ने आम महोत्सव का आयोजन किया था, जिसमें किसानों को आर्डर भी मिला था।

उन्होंने कहा कि हमारी सरकार ने भारत सरकार के सहयोग से प्रदेश के किसानों के लिए सहारनपुर, अमरोहा, लखनऊ और वाराणसी में चार पैक हाउस बनाए हैं। योगी ने कहा कि उत्तर प्रदेश आम उत्पादन में देश में अग्रणी है लेकिन अब हमें बढ़ती हुई आबादी के अनुरूप क्वांटिटी और क्वालिटी दोनों को बनाए रखने के लिए लगातार काम करना होगा।

केजरीवाल को जमानत सत्य की जीत, भाजपा के षड़यंत्र की हार:आप

नयी दिल्ली (एजेंसी)। आम आदमी पार्टी (आप) ने मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को सुप्रीम कोर्ट से मिली अंतरिम ज़मानत पर खुशी व्यक्त करते हुए शुक्रवार को कहा कि यह सत्य की जीत और भाजपा के षड़यंत्र की हार है। 'आप' के राष्ट्रीय महासचिव एवं सांसद डॉ. संदीप पाठक ने संवाददाताओं से आज कहा कि सुप्रीम कोर्ट का यह फैसला पूरे देश के लिए ऐतिहासिक है। न्यायालय के कुछ फैसले ऐसे होते हैं, जो देश की दिशा निर्धारित करते हैं। कोर्ट के आदेश ने भाजपा द्वारा रचे गए तथाकथित शराब घोटाले को ध्वस्त कर दिया है। इससे पहले धन शोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए) की स्पेशल कोर्ट के आदेश ने भी इस केस की सच्चाई देश के सामने उजागर कर दी थी। निचली अदालत के बाद जब यह मुद्दा सुप्रीम कोर्ट के सामने आया, तो इसमें एक बड़े प्रश्न पर विचार किया जा रहा था कि क्या यह पूरी गिरफ्तारी ही अवैध है? कोर्ट ने इस केस पर अध्ययन करते हुए इसे बड़ी बेंच के पास भेजा है। हमारा मानना है कि सुप्रीम कोर्ट जो भी करेगा, वह देश के लिए अच्छा ही होगा और यह भविष्य में देश को दिशा देगा। कोर्ट ने अरविंद केजरीवाल को अंतरिम जमानत दी है। यह ध्यान देने वाली बात है कि पीएमएलए के मामले में सारी दलीलों और सबूतों को सुनने और देखने के बाद ही किसी को जमानत या अंतरिम जमानत दी जाती है। डॉ. पाठक ने कहा , भाजपा को हर कोर्ट में मुंह की खानी पड़ रही है। यह केस उसके द्वारा रचित एक सर्कस है, जिसे अब बंद करने की जरूरत है। देश और दिल्ली की जनता का समय बर्बाद नहीं होना चाहिए। हर प्रधानमंत्री और उसके कार्यकाल की कोई न कोई उपलब्धि होती है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के कार्यकाल में देश को एक ऐसी तानाशाही व्यवस्था दी गई है।

वेस्टइंडीज टीम ने जेस एंडरसन को नहीं दिया गार्ड ऑफ ऑनर

नई दिल्ली (एजेंसी)। इंग्लैंड के तेज गेंदबाज जेम्स एंडरसन इस समय वेस्टइंडीज के खिलाफ टेस्ट मैच खेल रहे हैं। ये मैच उनके करियर का आखिरी मैच है। एंडरसन ने साल 2002 में डेब्यू किया और अब वह अपने 22 साल के करियर को अलविदा कह रहे हैं। एंडरसन को वेस्टइंडीज की ओर से गार्ड ऑफ ऑनर नहीं दिया गया, जिसकी वजह अब सामने आई है। वेस्टइंडीज ने पहली पारी में 121 रन बनाए थे। जेम्स एंडरसन ने एक विकेट लिया था। इसके बाद इंग्लैंड की पारी में वह आखिर में बल्लेबाजी करने आए। आमतौर पर जब कोई खिलाड़ी बल्लेबाजी करने आता है तो उसे गार्ड ऑफ ऑनर दिया जाता है।

हालांकि, वेस्टइंडीज ने एंडरसन को गार्ड ऑफ ऑनर नहीं दिया। वहीं सील्स ने इसके पीछे का कारण बताते हुए कहा कि, हमने एंडरसन के आने से पहले बात की थी कि हम उन्हें गार्ड ऑफ ऑनर देंगे। हालांकि, रन आउट के कारण हम दूसरी ओर चले गए और गार्ड ऑफ ऑनर नहीं दे पाए। हालांकि, अच्छी बात है कि जेसन वहां चला गया।

जेम्स एंडरसन टेस्ट क्रिकेट में 40,000 गेंद फेंकने वाले पहले तेज गेंदबाज बने

नई दिल्ली (एजेंसी)। इंग्लैंड क्रिकेट टीम के स्टार तेज गेंदबाज जेम्स एंडरसन वेस्टइंडीज के खिलाफ अपने टेस्ट करियर का आखिरी टेस्ट मैच खेल रहे हैं। इस टेस्ट मैच के दूसरे दिन वेस्टइंडीज के खिलाफ दूसरी पारी में उन्होंने 10 ओवर में 11 रन देकर 2 विकेट लिए और 5 ओवर मेडन भी फेंके। अपनी गेंदबाजी के दौरान एंडरसन ने टेस्ट क्रिकेट में 40 हजार गेंद फेंकने का कमाल कर डाला और क्रिकेट के सबसे लंबे फॉर्मेट में बतौर तेज गेंदबाज ऐसा करने वाले पहले खिलाड़ी बने। इसके अलावा उन्होंने मुथैया मुरलीधरन, अनिल कुंबले और शेन वॉर्न की खास लिस्ट में भी जगह बना ली है। वहीं जेम्स एंडरसन ने टेस्ट क्रिकेट में 40,000 गेंद फेंकने का कमाल किया। वो टेस्ट क्रिकेट में ऐसा करने वाले इंग्लैंड के पहले गेंदबाज बने, लेकिन ओवरऑलर वो टेस्ट में ऐसा करने वाले चौथे गेदंबाज बने। उनसे पहले ये कमाल मुथैया मुरलीधरन, अनिल कुंबले और शेन वॉर्न कर चुके हैं।

अब एंडरसन इन सभी पूर्व दिग्गज गेंदबाजों की लिस्ट में शामिल हो गए। वो टेस्ट क्रिकेट में सबसे ज्यादा गेंद फेंकने वाले गेंदबाजों की लिस्ट में चौथे नंबर पर हैं जबकि मुरलीधरन पहले स्थान पर हैं। एंडरसन वर्ल्ड के पहले ऐसे फास्ट बॉलर बन गए जिन्होंने टेस्ट में 40 हजार गेंद फेंकने का कमाल किया है। वो टेस्ट में सबसे ज्यादा गेंद फेंकने वाले तेज गेंदबाज भी हैं। इस लिस्ट में 33698 गेंद फेंकने वाले एंडरसन के साथी गेंदबाज रह चुके स्टुअर्ट ब्रॉड दूसरे नंबर पर हैं जबकि कर्टनी वॉल्श लिस्ट में तीसरे नंबर पर हैं। ग्लेन मैक्ग्रा चौथे जबकि कपिल देव इस लिस्ट में पांचवें नबंर पर हैं।

26 जुलाई से शुरू होगी श्रीलंका के खिलाफ टी20 सीरीज

नई दिल्ली (एजेंसी)। वर्तमान में भारतीय युवा टीम जिम्बाब्वे दौरे पर है। लेकिन इसके बाद भारतीय टीम टीम को 26 जुलाई से श्रीलंका के खिलाफ टी20 और वनडे सीरीज खेलनी है। जिसके लिए भारतीय क्रिकेट बोर्ड यानी बीसीसीआई ने भारत के श्रीलंका दौरे का शेड्यूल जारी किया है।

जहां भारतीय टीम 26 जुलाई से श्रीलंका के खिलाफ 3 मैचों की टी20 सीरीज में हिस्सा लेगी। जिसके बाद दोनों टीमों के बीच इतने ही वनडे मैचों की सीरीज खेली जाएगी। जो कि 1 अगस्त से शुरू होगी। वहीं कहा जा रहा है कि, श्रीलंका के खिलाफ टी20 सीरीज के लिए टीम इंडिया की कमान हार्दिक पंड्या को मिल सकती है। बता दें कि, हाल ही में संपन्न हुए टी20 वर्ल्ड कप 2024 जीत के बाद रोहित शर्मा ने टी20 फॉर्मेट से संन्यास ले लिया था। जिसके बाद हार्दिक पंड्या के नाम पर बतौर टी20 कप्तान के नाम की अटकलें शुरू हो गई हैं। जबकि वनडे सीरीज के लिए टीम इंडिया की कमान केएल राहुल के हाथ में जा सकती है। दरअसल, रोहित शर्मा ने बोर्ड से लंबा ब्रेक लिया है। जिस कारण उनकी अनुपस्थिति में केएल राहुल वनडे सीरीज के लिए टीम के कप्तान हो सकते हैं।

लामिन यमल को चुकानी पड़ सकती है इतनी कीमत

नई दिल्ली (एजेंसी)। यूरो कप 2024 फाइनल के दौरान स्पेन के युवा सेंसेशन लामिन यमल के साथ कुछ अजीबो गरीब हुआ है। दरअसल, 17 के होने वाले लामिन यमल अगर इंग्लैंड के खिलाफ पूरे 90 मिनट तक खेलते हैं तो जर्मनी के लेबल लॉ के तहत उन पर 27 लाख रुपये का जुर्माना लग सकता है। जिसे उनकी टीम को चुकाना होगा। लैमिन यामल इंग्लैंड के खिलाफ यूरो 2024 फाइनल से एक दिन पहले अपना 17वां जन्मदिन मनाएंगे। सिर्फ 16 साल और 362 दिन की उम्र में यामल यूरो में अब तक के सबसे कम उम्र के स्कोरर बन गए जब उन्होंने इस हफ्ते की शुरुआत में म्यूनिख में फ्रांस के खिलाफ सेमीफाइनल के 21वें मिनट में गोल किया। यमल के इस शानदार प्रदर्शन के बावजूद स्पेन के कोच लुइस डे ला फुएंते उन्हें इंग्लैंड के खिलाफ पूरा मैच नहीं खिला पाएंगे। जर्मनी के लेबर लॉ के अनुसार 18 वर्ष से कम उम्र के युवा किसी भी दिन रात 8 बजे के बाद काम नहीं कर सकते। एथलीटों के लिए थोड़ा फायदा है, जिन्हें रात 11 बजे तक काम करने की अनुमति है। स्पेन वर्सेस इंग्लैंड यूरो 2024 का फाइनल 14 जुलाई को स्थानीय समयानुसार रात 9 बजे शुरू होगा। ऐसे में स्पेन के पास लामिन यमल को खिलाने के लिए शुरुआती 60 मिनट होंगे। अगर इसके बाद भी टीम लामिन यमल को मैदान से बाहर नहीं बुलताी तो जर्मनी लेबल लॉ के तहत स्पनेश फुटबॉल एसोसिएशन पर 30 हजार यूरो यानी लगभग 27 लाख रुपये का जुर्माना लगेगा।

वेकिच को हराकर पाओलिनी लगातार दूसरे ग्रैंडस्लैम फाइनल में

लंदन (एजेंसी)। जैस्मिन पाओलिनी ने बृहस्पतिवार को यहां गैर वरीय डोना वेकिच को तीन सेट तक चले कड़े मुकाबले में हराकर विंबलडन टेनिस टूर्नामेंट के महिला एकल फाइनल में जगह बनाई जो उनका लगातार दूसरा ग्रैंडस्लैम फाइनल होगा। पहला सेट गंवाने के बाद वापसी करते हुए पाओलिनी ने दो घंटे और 51 मिनट चले सेमीफाइनल में वेकिच को 2-6, 6-4, 7-6 (10-8) से हराकर बाहर का रास्ता दिखाया। सातवीं वरीय पाओलिनी ने पहला सेट गंवाने के बाद दूसरा सेट अपने नाम किया। वह तीसरे और निर्णायक सेट में 1-3 से पीछे थी लेकिन वापसी करते हुए जीत दर्ज करने में सफल रहीं। पाओलिनी ने अंततः अपने तीसरे मैच प्वाइंट पर अंक जुटाकर जीत दर्ज की। वह पिछले महीने रोलां गैरो पर फ्रेंच ओपन के फाइनल में इगा स्वियातेक के खिलाफ हार गईं थी।

इटली की 28 साल की पाओलिनी एक ही सत्र में फ्रेंच ओपन और विंबलडन के खिताब मुकाबले में जगह बनाने वाली 2015 और 2016 में सेरेना विलियम्स के बाद पहली महिला हैं। फाइनल में पाओलिनी की भिड़ंत एलेना रिबाकिना और बारबरा क्रेसिकोवा के बीच होने वाले दूसरे सेमीफाइनल के विजेता से शनिवार को होगी।

इंग्लैंड ने वेस्टइंडीज को रौंदा, एंडरसन ने 704 विकेट के साथ टेस्ट करियर खत्म किया

लंदन (एजेंसी)। इंग्लैंड के महान तेज गेंदबाज जेम्स एंडरसन ने दूसरी पारी में 32 रन पर तीन विकेट चटकाकर पहले टेस्ट मैच के तीसरे दिन वेस्टइंडीज के खिलाफ अपनी टीम को एकतरफा जीत दिलाने में अहम भूमिका निभाई। पहली पारी में 121 रन बनाने वाली वेस्टइंडीज की टीम दूसरी पारी मैच के तीसरे दिन शुरुआती घंटे के अंदर 136 रन पर सिमट गयी। इंग्लैंड ने पारी और 114 रन से यादगार जीत दर्ज की। एंडरसन ने अपने करियर के आखिरी और 188वें टेस्ट मैच में कुल चार विकेट झटके जिससे इस प्रारूप में उनका करियर 704 विकेट के साथ खत्म हुआ। वेस्टइंडीज ने दिन की शुरुआत छह विकेट पर 79 रन से आगे से की, टीम इस समय इंग्लैंड से 171 रन पीछे थी। एंडरसन ने जोसुआ डिसिल्वा को आउट कर इंग्लैंड को दिन की पहली सफलता दिलायी। एंडरसन की बाहर निकलती गेंद डिसिल्वा के बल्ले का किनारा लेते हुए विकेटकीपर के दस्ताने में चली गयी। उन्हें एक और सफलता मिल जाती लेकिन उन्होंने गुडाकेश मोती (नाबाद 31) का कैच खुद ही टपका दिया। गट एटकिंसन ने आखिरी के तीनों विकेट चटकाकर पारी में पांच और मैच में कुल 12 विकेट लेकर अपने पदार्पण को यादगार बनाया। वह 1946 में एलेक बेडसर के बाद घरेलू मैदान पर एक टेस्ट में 10 विकेट लेने वाले इंग्लैंड के पहले गेंदबाज बन गए। एंडरसन टेस्ट में 700 से अधिक विकेट लेने वाले इकलौते तेज गेंदबाज है। वह मुथैया मुरलीधरन (800) और शेन वार्न (708) के बाद इस प्रारूप के तीसरे सबसे सफल गेंदबाज हैं।

कोच के साथ बदसलूकी का आरोप लगने के बाद शाहीन अफरीदी ने तोड़ी चुप्पी

कराची (एजेंसी)। पाकिस्तान के तेज गेंदबाज शाहीन अफरीदी पर टी20 वर्ल्ड कप 2024 के दौरान कोच के साथ दुर्व्यवहार करने का आरोप गा है। जिसके बाद सोशल मीडिया पर शाहीन को ट्रोल किया जा रहा है। इन आरोपों के बीच युवा खिलाड़ी ने वीडियो शेयर करके सभी को जवाब दिया है।

भारत के श्रीलंका दौरे से पहले वनिंदु हसरंगा ने छोड़ी कप्तानी

नई दिल्ली (एजेंसी)। एक तरफ श्रीलंका क्रिकेट बोर्ड ने भारत के खिलाफ खेली जाने वाली टी20 और वनेड सीरीज का शेड्यूल जारी किया। तो वहीं दूसरी तरफ वानिंदु हसरंगा ने भारती टीम के श्रीलंका दौरे से पहले ही टी20 फॉर्मेट की कप्तानी को छोड़ दिया। इसकी जानकारी उन्होंने श्रीलंका क्रिकेट बोर्ड ने दी है। बता दें कि, भारत सीमित ओवरों की सीरीज के लिए श्रीलंका का दौरा करेगा। जिसकी शुरुआत 26, 27 और 29 जुलाई को पाल्लेकल अंतरराष्ट्रीय स्टेडियम में होने वाले तीन टी20 अंतरराष्ट्रीय मुकाबलों के साथ होगी। इसके बाद कोलंबो में दोनों टीमों के बीच तीन वनडे अंतरराष्ट्रीय मुकाबले खेले जाएंगे। हसरंगा ने हाल में संपन्न टी20 विश्व कप में श्रीलंका की कप्तानी की थी जिसमें टीम सुपर आठ चरण में जगह बनाने में नाकाम रही थी। बयान में हसरंगा के हवाले से कहा गया कि, एक खिलाड़ी के तौर पर श्रीलंका के लिए मैं हमेशा सर्वश्रेष्ठ प्रयास करूंगा और हमेशा की तरह अपनी टीम और कप्तान का समर्थन करूंगा और उनके साथ खड़ा रहूंगा। एसएलसी ने कहा कि उसने हसरंगा का इस्तीफा स्वीकार कर लिया है। एसएलसी ने कहा कि, श्रीलंका क्रिकेट उनके इस्तीफे को स्वीकार करते हुए यह बताना चाहता है कि हसरंगा हमारी अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट योजनाओं में हमारे लिए एक महत्वपूर्ण खिलाड़ी बने रहेंगे।

जिम्बाब्वे के खिलाफ भारतीय युवा ब्रिगेड की नजरें सीरीज जीतने पर होंगी

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट की युवा ब्रिगेड जिम्बाब्वे के खिलाफ शनिवार को चौथे टी20 मैच के जरिये सीरीज अपने नाम करके एक नये दौर का आगाज करने के इरादे से उतरेगी। पहले मैच में अप्रत्याशित हार के बाद शुभमन गिल की कप्तानी वाली टीम ने शानदार वापसी करते हुए दूसरा और तीसरा मैच भारी अंतर से जीतकर 2-1 से बढत बना ली है। मौजूदा क्रिकेट परिदृश्य में जिम्बाब्वे पर जीत बहुत बड़ी नहीं कही जायेगी लेकिन इससे उन युवाओं में उम्मीद जरूर पैदा होगी जो आधुनिक क्रिकेट के कुछ दिग्गजों के संन्यास के बाद भारतीय टीम में जगह बनाने की कोशिश में हैं।

इनमें वॉशिंगटन सुंदर और अभिषेक शर्मा शामिल हैं। टी20 क्रिकेट से रविंद्र जडेजा के संन्यास के बाद वॉशिंगटन की नजरें स्पिन हरफनमौला के रूप में टीम में जगह पक्की करने पर लगी है। जिम्बाब्वे के खिलाफ

उन्होंने 4-5 की इकॉनॉमी रेट से छह विकेट लिये। श्रीलंका दौरे के लिये सफेद गेंद की टीम चुनते समय उनके नाम पर विचार जरूर होगा। उपयोगी स्पिन गेंदबाज होने के साथ वह निचले क्रम के अच्छे बल्लेबाज भी हैं। वहीं अभिषेक ने दूसरे टी20 में 47 गेंद में शतक लगाकर अपनी प्रतिभा की बानगी पेश की। भारत के पास अब इस प्रारूप में विराट कोहली और रोहित शर्मा नहीं हैं लिहाजा वह यशस्वी जायसवाल के साथ पारी की शुरूआत काविकल्प हो सकते हैं। वह एक और अच्छी पारी खेलकर अपना दावा पक्का करना चाहेंगे। संजू सैमसन और शिवम दुबे के लिये भी इस सीरीज में बहुत कुछ दांव पर है।

टी20 विश्व कप में खिताबी जीत के बाद मुंबई में विजय परेड में भाग लेकर यहां आये दुबे और सैमसन बाकी दोनों मैचों में उम्दा प्रदर्शन करना चाहेंगे। भारतीय टीम प्रबंधन अपने गेंदबाजों खासकर लेग स्पिनर रवि बिश्नोई के प्रदर्शन से खुश होगा जिसकी गुगली मेजबान बल्लेबाज खेल ही नहीं पा रहे हैं। बिश्नोई, आवेश खान और वॉशिंगटन छह-छह विकेट ले चुके हैं। मुकेश कुमार को पिछले मैच में आराम दिया गया था जो आवेश की जगह खेल सकते हैं। दूसरी ओर पहला मैच जीतने के अलावा जिम्बाब्वे ने इस सीरीज में कुछ उल्लेखनीय नहीं किया है। उसके तेज गेंदबाज ब्लेसिंग मुजाराबानी और अर्धशतक जमाने वाले डियोन मायर्स के अलावा कोई खिलाड़ी छाप नहीं छोड़ सका है।

भारत ने जबर्दस्त जुझारूपन दिखाकर टी20 विश्व कप जीता -वीवीएस लक्ष्मण

नयी दिल्ली (एजेंसी)। महान बल्लेबाज वीवीएस लक्ष्मण ने हार की कगार पर पहुंचकर टी20 विश्व कप में खिताबी जीत दर्ज करने वाली भारतीय क्रिकेट टीम के जुझारूपन की तारीफ करते हुए कहा कि खिलाड़ियों और पूर्व मुख्य कोच राहुल द्रविड़ का जश्न मनाने का अंदाज साबित करता है कि इस जीत के उनके लिये क्या मायने थे। भारत ने दक्षिण अफ्रीका को 29 जून को बारबडोस में खेले गए फाइनल में सात रन से हराकर 11 साल में पहली बार आईसीसी खिताब जीता। लक्ष्मण ने बीसीसीआई द्वारा एक्स पर डाले गए वीडियो में कहा ,'' दक्षिण अफ्रीका को आखिरी पांच ओवर में 30 रन चाहिये थे। उसके बाद से जुझारूपन, दृढता और आत्मविश्वास दिखाकर हार की कगार से जीत छीन लेना दिखाता है कि यह टीम कितनी मजबूत है।'' उन्होंने कहा ,'' सभी ने इतनी मेहनत की थीऔर जीत के बाद का जश्न इस सफलता के पीछे की बड़ी कहानी कहता है।'' बेंगलुरू में राष्ट्रीय क्रिकेट अकादमी के प्रमुख लक्ष्मण ने कहा ,'' विश्व कप जीतना खास है। जब आप सर्वश्रेष्ठ के खिलाफ खेलकर ट्रॉफी जीते तो उसके मायने और बढ जाते हैं।'' उन्होंने कहा ,'' सभी ने अपने जज्बात जाहिर किये और इससे पता चलता है कि हर एक खिलाड़ी और सहयोगी स्टाफ के लिये यह जीत क्या मायने रखती

है। आपने हार्दिक पंड्या को आखिरी गेंद डालने के बाद रोते हुए देखा। रोहित शर्मा को मैदान पर देखा।'' लक्ष्मण ने कहा ,'' पूरा देश जीत का जश्न मना रहा है। हम छह महीने पहले भी जीत के करीब पहुंचे थे लिहाजा यह जीत खास थी। हमें वनडे विश्व कप जीतना चाहिये था क्योंकि पूरे टूर्नामेंट में सर्वश्रेष्ठ होने के बाद हम फाइनल में हार गए थे।'' आम तौर पर सार्वजनिक तौर पर अपनी भावनायें व्यक्त नहीं करने वाले द्रविड़ के खुलकर जश्न मनाने के बारे में उन्होंने कहा ,'' मैने उसके साथ इतनी क्रिकेट खेली है और उसे इतने साल से जानता हूं और उसका इस तरह जश्न मनाना। जब आखिरी गेंद डाली गई या टीम के सदस्यों के साथ बातचीत में या ट्रॉफी थामते समय।'' उन्होंने कहा ,'' रोहित और विराट कोहली ने उसे ट्रॉफी सौंपकर बहुत अच्छा किया और ट्रॉफी थामने के बाद उसने जिस तरह से जश्न मनाया, उससे साबित होता है कि इस जीत के सभी के लिये क्या मायने थे।'' लक्ष्मण ने टी20 प्रारूप में योगदान के लिये विराट, रोहित और रविंद्र जडेजा की तारीफ की। तीनों ने इस प्रारूप को अलविदा कह दिया है। उन्होंने कहा ,'' इस खेल के तीन दिग्गजों विराट, रोहित और जडेजा को इस महान खेल में उनके योगदान के लिये मैं बधाई देता हूं। उन्होंने जिस जुनून का प्रदर्शन किया, वह अप्रतिम है। मुझे उम्मी है कि वह दूसरे प्रारूपों में देश का नाम रोशन करते रहेंगे।

पौध रोपण के साथ उसे वृक्ष के रूप में संरक्षित करने का भी संकल्प लें-प्रतिमा बागरी

महतैन में रोपे गये एक हजार आम के पौधे

राज्यमंत्री, जिला पंचायत अध्यक्ष, कलेक्टर ने किया वृक्षारोपण

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। एक पेड़ मां के नाम और वृहद वृक्षारोपण के अभियान में शुक्रवार को नागौद जनपद के महतैन गांव में चंडी देवी मंदिर के पास लगभग 2 हेक्टेयर जमीन में एक हजार आम के पौधे एक साथ रोपे गये ग्रामीण विकास विभाग एवं पंचायत के सौजन्य से आयोजित वृक्षा रोपण कार्यक्रम में राज्यमंत्री नगरीय विकास एवं आवास विभाग श्रीमती प्रतिमा बागरी, जिला पंचायत अध्यक्ष रामखेलावन कोल, कलेक्टर अनुराग वर्मा, सीईओ जिला पंचायत सुश्री संजना जैन, एसडीएम एपी द्विवेदी, कार्यपालन यंत्री आरईएस अश्विनी जायसवाल, जनपद अध्यक्ष नागौद, जिला पंचायत सदस्य विष्णु लोधी, सुभाषचन्द्र बुनकर, सरपंच वासना माली सहित पंचायत प्रतिनिधियों, स्व-सहायता समूह की दीदीओ एवं आम ग्रामीणों ने एक-एक आम का पौधा रोपित किया।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए राज्यमंत्री श्रीमती बागरी ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के संकल्प को पूरा करने के लिए मध्यप्रदेश में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में पूरे प्रदेश में पौधों का रोपण किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि हमारा फर्ज बनता है कि इन पौधों की सुरक्षा करें और इन्हें एक विकसित पेड बनाए। उन्होंने कहा कि वृक्ष है तो जल है, जल है तो कल है, जीवन के लिए भी पेड अत्यंत जरूरी है। आने वाली पीढी के सुरक्षित, स्वस्थ तथा बेहतर जीवन के लिए भी पेडों की अत्यंत आवश्यकता है। राज्यमंत्री श्रीमती बागरी ने कहा कि महतैन गांव में 1 हजार पौधे लगाने का कार्य पूर्ण हो गया है। इस महत्वाकांक्षी अभियान में समाज के हर वर्ग की सक्रिय भागीदारी मिल रही है। अब हमने निर्णय लिया है कि इस तरह का अभियान हर वर्ष चलाया जाएगा। उन्होंने कहा कि धरती पर बढते तापमान और वर्षा की कमी वृक्ष नहीं लगाये जाने से हो रही है। पर्यावरण को अनुकूल बनाने के लिए वृक्ष लगाए जाएं। इस दौरान राज्यमंत्री श्रीमती बागरी ने सभी से अपील करते हुए कहा कि अपने स्तर पर पौधरोपण करने तथा रोपे गए पौधों की सुरक्षा करने की संकल्प लें। उन्होंने कहा कि ग्राम पंचायत असरार में भी इसी तरह का वृक्षारोपण किया जायेगा।

जिला पंचायत अध्यक्ष रामखेलावन कोल ने कहा कि पूरे देश में प्रधानमंत्री जी के आव्हान पर एक पेड़ मां के नाम लगाने का अभियान चल रहा है। वृक्ष हमें प्राण वायु के साथ ही जीवन प्रदान करते हैं। उन्होंने प्रत्येक परिवार से हर सदस्य के नाम कम से कम एक पौधा लगाकर उसे वृक्ष के रूप में संरक्षित करने की अपील भी की।

राज्यमंत्री ने जनता दरबार लगाकर सुनी समस्यायें

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। नगरीय विकास एवं आवास राज्यमंत्री श्रीमती प्रतिमा बागरी ने शुक्रवार को विधानसभा क्षेत्र कार्यालय में आयोजित जनता दरबार में जिले की आम जनता एवं अन्य गणमान्य नागरिक द्वारा प्रस्तुत की गई समस्याओं से रूबरू हुईं। राज्यमंत्री श्रीमती बागरी द्वारा कुछ समस्याओं का निराकरण विभिन्न विभाग से आये अधिकारियों द्वारा कराया गया और जिन समस्याओं का निराकरण शासन स्तर पर किया जाना है उसके लिये प्रतिवेदन तैयार करने के निर्देश दिये गए।

राज्यमंत्री ने किया सोहावल में वृक्षारोपण

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। नगरीय विकास एवं आवास राज्यमंत्री श्रीमती प्रतिमा बागरी ने शुक्रवार विधानसभा क्षेत्र रैगांव के ग्राम सोहावल के मुक्तिधाम में वृक्षारोपण किया। इस दौरान राज्यमंत्री श्रीमती बागरी ने कहा कि प्रधानमंत्री जी ने समस्त देशवासियों से अभियान के तहत एक पेड़ मां के नाम लगाने का आह्वान किया है। प्रधानमंत्री जी का आह्वान देश ही नहीं दुनिया को एक नई दिशा दिखाने वाला है। उन्होंने कहा कि सदियों से भारत भूमि नदियों, पर्वतों और वनों की रक्षा और संरक्षण करने वाली रही है। राज्यमंत्री श्रीमती बागरी ने कहा कि एक पेड़ को काटना यानी जीवन के एक क्षण को काटने के समान है साथ ही प्रत्येक व्यक्ति को कम से कम एक पौधा अनिवार्य रूप से लगाना चाहिए।

कलेक्टर ने किया स्कूल और स्वास्थ्य केन्द्र का निरीक्षण

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। कलेक्टर अनुराग वर्मा ने शुक्रवार को नागौद तहसील के ग्रामीण क्षेत्र के भ्रमण के दौरान ग्राम करहिया खुर्द हाईस्कूल का औचक निरीक्षण किया। उन्होंने बच्चो की क्लास में जाकर पठन पाठन की गतिविधियों की जानकारी ली। कलेक्टर ने कक्षा में जाकर बच्चों से सवाल भी किये और उनकी जिज्ञासाओं का समाधान भी किया। कलेक्टर ने अपने भ्रमण के दौरान वृहद वृक्षारोपण अभियान के तहत पटपरनाथ में वृक्षारोपण कार्य का शुभारंभ किया। इस मौके पर सीईओ जिला पंचायत संजना जैन भी उपस्थित रही।

कलेक्टर अनुराग वर्मा ने अपने ग्रामीण क्षेत्र के भ्रमण के दौरान सिंहपुर में स्वास्थ्य केन्द्र अस्पताल का औचक निरीक्षण किया। यहां पर एक नर्स को छोड़कर अन्य स्टाफ अनुपस्थित पाये गये। उन्होंने मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी सतना को चिकित्सा अधिकारी प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र सिंहपुर डॉ. रोहित गुप्ता के खिलाफ अनुशासनात्मक कार्यवाही और अनुपस्थित पाये जाने पर एक दिन का अवैतनिक किये जाने नोटिस जारी करने के

निर्देश दिये। कलेक्टर अनुराग वर्मा ने नागौद में बन रहे सीएम राइज स्कूल और उसके निर्माण कार्यों का निरीक्षण भी किया तथा कार्य में गति बढाने के निर्देश दिये। इसके उपरांत कलेक्टर ने ग्राम महतैन में आयोजित वृहद वृक्षारोपण कार्यक्रम में हिस्सा लेकर आम का पौध रोपण किया तथा चंडी देवी मंदिर के आस-पास पूर्व में किये गये वृक्षारोपण कार्य का निरीक्षण किया।

कलेक्टर मैहर ने सुनी फोन पर आमजनों की समस्यायें

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। मैहर कलेक्ट्रेट के सभाकक्ष में कलेक्टर श्रीमती रानी बाटड ने शुक्रवार को दूरभाष नंबर 07674-299232 के माध्यम से प्रातः 11 बजे से 12 बजे तक 5 आवेदकों की समस्यायें सुनकर त्वरित निराकरण करने के निर्देश दिये। कलेक्टर श्रीमती बाटड ने विभिन्न क्षेत्र के आमजन की समस्याओं को सुना और संबंधित अधिकारी को तत्काल मौके पर निराकरण करने के निर्देश दिए गए। इस दौरान दूरभाष माध्यम से प्राप्त पहली सूचना में प्रशांत पाण्डेय निवासी हरनामपुर द्वारा बताया गया कि ग्राम पंचायत सगमनीय चोपड़ा में मेरी माता गीता पाण्डेय की आराजी भूमि पर कुछ स्थानीय लोगो द्वारा अवैध कब्जा कर खेती की जा रही है। इसी प्रकार दूसरी सूचना तेजभान सिंह पिता बद्री प्रसाद निवासी ग्राम

पंचायत पोड़ी के वार्ड क्रमांक 4 एवं 5 में बरसात के पानी की निकासी न होने की वजह से रास्तों में पानी भर जाने के कारण ग्रामीणों को परेशानी से संबंधित रही। नारेंद्र पटेल पिता रविन्द्र प्रसाद निवासी ग्राम पंचायत भरेवा ने बताया की आराजी की भूमि का 4 जुलाई को सीमांकन होने के बाद मेरे द्वारा खेती की गई। लेकिन 7 जुलाई को दीपक पटेल, रामलखन पटेल, प्रेमलाल पटेल के द्वारा उसी खेत में दोबारा खेती की जा रही है। सुनीता पटेल निवासी ग्राम पंचायत घुरवाई पोस्ट बदेरा के द्वारा बताया गया की पारिवारिक विवाद के चलते मुन्ना लाल पटेल द्वारा मुझे खेती नहीं करने दी जा रही है। गिरजा शंकर त्रिपाठी निवासी ग्राम पकरिया ने बताया कि राजस्व निरीक्षक अमदरा तहसील के पास विगत 15 वर्षो से नक्शा नही है और वार्ड क्रमांक 15 में हैंडपंप खराब पड़े है। कलेक्टर ने इन सभी समस्याओं को सुना और संबंधित अधिकारियों को कार्यवाही के निर्देश दिए। इसी दौरान कलेक्टर ने हल्का पटवारी संतोष सिंह और उपयंत्री जयसिंह अरखेल को तत्काल मौके पर भेजकर ग्राम पोड़ी में अस्थाई नाली बनाकर जलभराव की समस्या का निराकरण कराया गया। तहसील अमरपाटन और रामनगर में फोन इन कार्यक्रम में कोई भी शिकायत नहीं प्राप्त हुई है।

मदरसा बोर्ड के परीक्षा आवेदन पत्र 25 जुलाई तक भरे जा सकेंगे

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। मदरसा बोर्ड की हाई स्कूल और हायर सेकेण्डरी उर्दू माध्यम परीक्षा सत्र 2024 के लिये परीक्षा आवेदन पत्र अधिकृत अध्ययन केन्द्रों के माध्यम से ऑनलाइन भरे गये थे अब बोर्ड ने नियत आवेदन तिथि को बढ़ाया है और बिना विलम्ब शुल्क के आवेदन पत्र 25 जुलाई 2024 तक भरे जा सकेंगे। ऑनलाइन आवेदन में त्रुटि-सुधार की तिथि अब 31 जुलाई, 2024 निर्धारित किया गया है। इस संबंध में बोर्ड के फोन नम्बर 0755-2735931, 2731437 और 2737362 से भी जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

एडिप योजनांतर्गत दिव्यांगजनों को परीक्षण हेतु शिविर आयोजित

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। हाउसिंग एण्ड अरवन डेपलपमेंट कार्पोरेशन (हुडको) के नियमित सामाजिक (सीएसआर) योजनान्तर्गत भारतीय कृत्रिम अंग निर्माण निगम (एलिम्को) जबलपुर द्वारा मैहर जिले के दिव्यांगजनों को निःशुल्क सहायक उपकरण व कैलिपर्स एवं कृत्रिम अंग प्रदाय करने हेतु शिविर का आयोजन किया गया है। मैहर कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट रानी बाटड द्वारा जारी आदेशानुसार उपकरणों के लिए पात्रता का परीक्षण करने तीन दिवसीय मूल्यांकन शिविर का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें 22 जुलाई को जनपद पंचायत मैहर, 23 जुलाई को जनपद पंचायत अमरपाटन तथा 25 जुलाई को जनपद पंचायत रामनगर में शिविर आयोजित किये जायेंगे। दिव्यांगजन परीक्षण शिविर में दस्तावेज के साथ उपस्थित रहेंगे। शिविर में फेटो, आधारकार्ड, दिव्यांग प्रमाण पत्र (यूडीआईडी कार्ड) 40 प्रतिशत या उससे अधिक अन्य सहायक उपकरण, 80 प्रतिशत या उससे अधिक मोटराईज्ड ट्रायसिकल के लिए, 100 प्रतिशत दिव्यांगता नेत्रहीन दिव्यांगों के लिए (सुगम्य केन एवं स्मार्ट फोन)। समग्र आईडी, बीपीएल राशनकार्ड या आय प्रमाण पत्र तथा आवासीय प्रमाण पत्र साथ लाना अनिवार्य है।

जिले में अब तक 163.4 मि.मी. औसत वर्षा दर्ज

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। जिले में इस वर्ष 1 जून से 12 जुलाई 2024 तक 163.4 मिलीमीटर औसत वर्षा दर्ज की गई है। अधीक्षक भू-अभिलेख सतना से प्राप्त जानकारी के अनुसार अब तक जिले की सतना (रघुराजनगर) तहसील में 328.9 मि.मी., सोहावल (रघुराजनगर) में 123.8 मि.मी., बरौंधा (मझगवां) में 141.5 मि.मी, बिरसिंहपुर में 148 मि.मी., रामपुर बाघेलान में 82 मि.मी., नागौद में 171.1 मि.मी., जसो (नागौद) में 57.5 मि.मी. एवं उचेहरा में 254 मि.मी. वर्षा दर्ज की गई है। जिले की औसत सामान्य वर्षा 891.7 मि.मी. है। गत वर्ष इस अवधि में 163.8 मि.मी. औसत वर्षा दर्ज की गई थी।

स्वास्थ्य केन्द्र उचेहरा के 15 कर्मचारियों को नोटिस जारी

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. एलके तिवारी ने शुक्रवार को सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र उचेहरा का आकस्मिक निरीक्षण किया। प्रातः 10.10 बजे आकस्मिक निरीक्षण के दौरान मात्र एक चिकित्सक द्वारा चिकित्सकीय सेवायें दी जा रही है जबकि स्वास्थ्य केन्द्र उचेहरा में 4 चिकित्सक कार्यरत है। इस दौरान अनुपस्थित पाये गये 3 चिकित्सक सहित 15 कर्मचारियों को कारण बताओ नोटिस जारी कर स्पष्टीकरण मांगा गया है।

मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी ने बताया कि निरीक्षण के दौरान मेटरनिटी विंग में अत्यधिक गंदगी, बायोमेडीकल वेस्ट, प्रबंधन व्यवस्थित नहीं पाये जाने पर ऐसा प्रतीत हो रहा था कि कई दिनों से साफ सफाई नहीं की गई है। इसी प्रकार भर्ती मरीजों डाइट प्रोटोकॉल अनुसार नहीं प्रदान किया जा रहा है। मरीजों से चर्चा करने पर मरीजों द्वारा बताया गया कि बाजार से खाद्य सामग्री स्वयं खरीद कर उपयोग की जा रही है। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी द्वारा सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र उचेहरा में पाई गई कमियों को दो दिवस में दूर करने के निर्देश दिये गये हैं। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी द्वारा जारी की गई नोटिस में अनुपस्थित पाये गये शिशु रोग विशेषज्ञ डॉ. प्रदीप निगम, मेडीकल आफीसर डॉ. एसएन प्रसाद, नर्सिंग आफीसर शालिनी सिंह, सविता नाग, फार्मासिस्ट गंगा शरण सेन, एसएचसी शोभिता दहायत, पुष्पा कोरी, एएनएम अर्चना मिश्रा, शशिकला प्रजापति, डीईओ देवेन्द्र श्रीवास्तव, अतुल देव, एफडी पूर्णिमा द्विवेदी, लेखापाल सीपी मिश्रा तथा एफएचडब्ल्यू रंजना सिंह के शामिल है।

प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना में किसान 31 जुलाई तक करा सकते हैं बीमा

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना अंतर्गत खरीफवर्ष 2024 हेतु बीमा इकाई-1, बीमा इकाई-2, एवं जिला स्तर पर बीमित की जाने वाली फसलों की अधिसूचना जारी की गई है। किसानों की अधिसूचित फसलों का बीमा करने हेतु बैंकों द्वारा प्रीमियम नामे किये जाने की अंतिम तिथि 31 जुलाई 2024 निर्धारित की गई है।

उप संचालक किसान कल्याण तथा कृषि विकास मनोज कश्याप ने बताया कि बैंकों द्वारा बीमित किसानों की भारत सरकार के फसल बीमा पोर्टल पर समय सीमा में प्रविष्टि किया जाना आवश्यक है। यदि किसी कृषक द्वारा गत वर्ष बोई गई फसल में परिवर्तन किया गया है तो किसान द्वारा संबंधित बैंक से सम्पर्क कर बीमांकन की अंतिम तिथि के 2 दिन पूर्व 29 जुलाई 2024 तक बोई गई फसल की जानकारी बैंकों को उपलब्ध कराना अनिवार्य है। ऋणी कृषकों के योजना की पंजीयन की अंतिम तिथि के 7 दिवस पूर्व (24 जुलाई 2024) को देनी होगी। किसानों की सुविधा को देखते हुये प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना मौसम खरीफ2024 अंतर्गत पंजीयन के दौरान खसरा नम्बर तथा बीमित भूमि के क्षेत्रफल की सही-सही जानकारी बैंक द्वारा पोर्टल पर दर्ज किया जाना है। जिससे किसानों को समय पर सही बीमा पॉलिसी जारी हो सके। सतना एवं मैहर जिले की समस्त बैंक शाखाओं को निर्देशित किया गया है कि वे निर्धारित समय सीमा के पूर्व ऋणी कृषकों के फसल बीमा संबंधी जानकारी फसल बीमा पोर्टल पर अनिवार्य रूप से दर्ज करें। अऋणी व डिफाल्टर कृषकों से आग्रह है कि अन्तिम तिथि का इंतजार न करते हुए शीघ्र ही पास की बैंक शाखा जैसे- सहकारी बैंक/क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक तथा राष्ट्रीयकृत बैंक और नजदीक के कॉमन सर्विस सेंटर पर जाकर फसल बीमा करायें, ताकि उनकी फसलों का बीमा योजना के तहत हो सके। फसल बीमा करने हेतु बीमा प्रस्ताव पत्र, भू-अधिकार पुस्तिका की फोटोकॉपी, बोवनी का प्रमाण-पत्र (संबंधित पटवारी अथवा पंचायत सचिव से प्राप्त करें) आधार कार्ड, वोटर आई.डी. कार्ड, पेनकार्ड इत्यादि (आधार कार्ड अनिवार्य) में से कोई एक, बैंक पासबुक की फोटोकॉपी साथ ले जायें।

प्रधानमंत्री कॉलेज आफएक्सीलेंस का उदघाटन 14 जुलाई को

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। मध्यप्रदेश के 55 महाविद्यालयों को राज्य शासन ने सत्र 2024-25 से पीएम कॉलेज आफएक्सीलेंस के रूप में उन्नयन करने का निर्णय लिया है। इनमें सतना जिले का अग्रणी महाविद्यालय शहीद पद्मधर सिंह शासकीय स्वशासी परिषातकोत्तर महाविद्यालय सतना और मैहर जिले का शासकीय विवेकानंद महाविद्यालय मैहर को पीएम एक्सीलेंस कॉलेज के रूप में चयनित किया गया है। प्रधानमंत्री कॉलेज आफएक्सीलेंस सतना का उद्घाटन समारोह 14 जुलाई को दोपहर 1 बजे से प्रारंभ किया जायेगा। मध्यप्रदेश के सभी 55 महाविद्यालयों का उद्घाटन 14 जुलाई को भारत सरकार के गृह मंत्री श्री अमित शाह एवं प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की उपस्थिति में इंदौर के अटल बिहारी बाजपेयी कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय से वर्चुअली किया जायेगा। उद्घाटन समारोह का आनलाइन टू वे सीधा प्रसारण सभी पीएम एक्सीलेंस कॉलेज के समारोह में देखा जायेगा। सतना जिले के प्रधानमंत्री कॉलेज आफ एक्सीलेंस शहीद पदम धर सिंह शासकीय परिषातकोत्तर महाविद्यालय सतना के उद्घाटन समारोह का स्थानीय कार्यक्रम 14 जुलाई को अपरान्ह 1 बजे से नगरीय विकास एवं आवास राज्यमंत्री श्रीमती प्रतिमा बागरी के मुख्यातिथ्य में और सांसद सतना श्री गणेश सिंह की अध्यक्षता में आयोजित किया गया है। प्राचार्य डॉ. शिवेश प्रताप सिंह ने बताया कि उद्घाटन समारोह में विधायक सतना सिद्धार्थ कुशवाहा, विधायक नागौद नागेन्द्र सिंह, विधायक चित्रकूट सुरेन्द्र सिंह गहरवार, विधायक रामपुर बघेलान विक्रम सिंह, महापौर योगेश ताम्रकार, कलेक्टर अनुराग वर्मा, अध्यक्ष जनभागीदारी समिति विजय यादव और अध्यक्ष शासी निकाय धर्मेन्द्र यादव विशिष्ट अतिथि के रूप उपस्थित रहेंगे। इस अवसर पर महाविद्यालय परिसर में विद्या वन व अन्य वाटिकाओं में वृहद स्तर पर वृक्षारोपण किया जायेगा। प्राचार्य डॉ. सिंह ने जिले के सभी गणमान्य नागरिकों, जनप्रतिनिधियों से कार्यक्रम में उपस्थित रहने का आग्रह किया है।

स्वत्वाधिकारी मुद्रक प्रकाशक संदीप द्विवेदी द्वारा मीडिया प्रकाशन रीवा से मुद्रित कर मीडिया ऑडीटर कार्यालय प्रभात बिहार कॉलोनी सतना से प्रकाशित, संपादक संदीप द्विवेदी आर.एन.आई नं.एमपीएचआईएन/2021/81683
प्रधान कार्यालय रीवा (सिटी कार्यालय चक्रधर सिटी सेंटर रीवा) फोन. नं. 9407132714, 7974467831 Mediaauditor1@gmail.com पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार, सभी विवादो का न्याय क्षेत्र रीवा होगा।